ASMA ZAUQIA
9901038590

मातृ-भूमि

- श्री भगवतीचरण वर्मा

मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम!
अमरों की जननी, तुमको शत-शत बार प्रणाम!
मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम।
तेरे उर में शायित गांधी, बुद्ध और राम,
मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम।

हरे-भरे हैं खेत सुहाने,
फल-फूलों से युत वन-उपवन,
तेरे अंदर भरा हुआ है
खनिजों का कितना व्यापक धन।
मुक्त हस्त तू बाँट रही है
सुख-संपत्ति, धन-धाम,
मातृ-भू, शत-शत बार प्रणाम।

एक हाथ में न्याय पताका,
ज्ञान-दीप दूसरे हाथ में,
जग का रूप बदल दे, हे माँ,
कोटि-कोटि हम आज साथ में।
गूँज उठे जय-हिंद नाद से-
सकल नगर और ग्राम,
मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम।

ASMA ZAUQIA
9901038590

कवि परिचय :-

- श्री भगवतीचरण वर्मा

श्री भगवतीचरण वर्मा का जन्म 30 अगस्त 1903 को उत्तर प्रदेश राज्य के उन्नाव ज़िले के शफ़ीपुर गाँव में हुआ था। उन्हों ने इलाहबाद से बी.ए., एल.एल.बी.,की डिग्री प्राप्त की। उन्हों ने 'विचार' तथा 'नवजीवन' नामक पत्रिकाओं का संपादन किया था। और आकाशवाणी के कई केन्द्रों में भी सेवा की। उनके 'चित्रलेखा' उपन्यास पर दो बार फ़िल्म-निर्माण हुआ। दूसरा उपन्यास 'भूले-बिसरे चित्र' साहित्य अकादमी से पुरस्कृत है। अपने खिलौने, पतन, तीन षर्ष, टेड़े-मेढ़े रास्ते, युवराज चूण्डा (उपन्यास), मेरी कहानियाँ, मोर्चाबंदी, और संपूर्ण कहानियाँ (कहानी-संग्रह), मेरी कविताएँ, सविनय और एक नाराज़ कविता (कविता-संग्रह), मेरे नाटक, वसीयत, (नाटक) आदि उनकी अन्य लोकप्रिय कृतियाँ हैं। 5अक्तूबर 1981 को वर्मा जी का देहांत हुआ।

ASMA ZAUQIA
9901038590

कविता का आशय तथा भावार्थ

श्री भगवती चरण वर्मा जी का नाम हिंदी साहित्य में आदर के साथ लिया जाता है। "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" अर्थात जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से बढ़कर है। प्रस्तुत कविता में कवि के देश प्रेम की झलक दिखाई देती है। कवि इस कविता के द्वारा मातृ-भूमि(भारत-भूमि) की विशेषता तथा श्रेष्ठता का परिचय देते हुए छात्रों के मन में देश प्रेम का भाव जगाना चाहते हैं।

पद्य की प्रंभिक पंक्तियों में कवि मातृ-भूमि को कोटि-कोटि नमन करते हैं। भारत में जन्म लेकर सत्य, अहिंसा, ज्ञान, बुद्धि, सहनशीलता, वचन को अपने प्राणों से भी अधिक (-"प्राण जाए पर वचन न जाए") समझने वाले, अपने अच्छे कर्मों, आदर्शों तथा साहस से देश का उद्धार करने वाले अमर योद्धाओं , महापुरुषों तथा विभूतियों का स्मरण करते हुए कवि कह रहे हैं कि सत्य-अहिंसावादी गांधी जी, महाज्ञानी गौतम बुद्ध और मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री राम, जैसे भारत माँ के अमर सपूत माँ के हृदय में सोये हुए हैं।

कवि भारत माँ के प्राकृतिक सौंदर्य, वन-संपदा तथा खनिज संपत्ति का वर्णन करते हुए, कह रहे हैं कि भारत माँ के खेत सुंदर और हरे-भरे हैं। वन और उपवन फल और फूलों से युक्त हैं। भारत की भूमि में अपार खनिज संपत्ति भरी हुई है। यह संपदा सुख और समृद्धि प्रदान है। भारत माँ अपने उदार मन से और मुक्त हाथों से सुख-संपत्ति, धन-धाम और अपनी प्राकृतिक संपदा को एक समान; जाति, धर्म, वर्ग तथा भाषा का भेद-भाव किए बिना बाँट रही है।

पद्य की अंतिम पंक्तियों में कवि भारत माँ के स्वरूप की पहचान कराते हुए कह रहे हैं कि भारत माँ के एक हाथ में न्याय पताका (त्याग, शांति, समृद्धि, और प्रगति का प्रतीक है) और दूसरे हाथ में ज्ञान का दीप है। अर्थात भारत की संस्कृति में हमेशा न्याय के मार्ग पर चलने तथा अज्ञान, अंधकार (आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक, राजनीतिक, धार्मिक, भेद- भाव या ऊँच-नीच) को ज्ञान के प्रकाश से मिटाने का प्रयास चलते आया है। जैसे भारत माँ ने भारतवासियों को न्याय और ज्ञान के पथ पर चलने के संस्कार दिये हैं, उसी तरह कवि माँ से प्रार्थना कर रहे हैं कि सारे जग का रूप भी माँ अपनी कृपा से बदल दें। आज कोटि - कोटि भारतवासी माँ के साथ हैं। और कवि की अपेक्षा है कि सारे भारतवासी आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक, राजनीतिक, तथा धार्मिक भेद- भावों को मिटा कर अपनी एकता और ज्ञान के प्रदर्शन से समस्त विश्व के कोने-कोने में सारे भारत का नाम प्रकाशित करें। अर्थात कवि चाहते हैं कि सारे भारतवासियों के जय हिंद का नाद विश्व के सकल नगर और ग्राम में भी गूँजना चाहिए। यह कहते हुए कवि भारत-मता की वंदना कर रहे हैं, और सौ-सौ बार प्रणाम कर रहे हैं।

ASMA ZAUQIA
9901038590

शब्दार्थ (Word Meaning / Semantics) :-

उर - सीना, हृदय - ಎದೆ , ಹೃದಯ

शायित - सोया हुआ - ಮಲಗಿರುವ

अमर - मृत्युहीन, जो कभी नहीं मरता - ಶಾಶ್ವತ

हस्त - हाथ - ಹಸ್ತ - ಕೈ

सुहाने - सुंदर - ಸುಂದರ

धाम - घर - ಧಾಮ, ಮನೆ

गूँजना - प्रतिध्वनित होना - ಪ್ರತಿಧ್ವನಿ

विलोम शब्द (Antonyms) :-

अमर - मर्त्य

अंदर - बाहर

व्यापक - सीमित

सुख - दुख

न्याय - अन्याय

ज्ञान - अज्ञान

नगर - ग्राम

मुक्त - ग्रस्त

शब्द युग्म (Combination Words) :-

हरे - भरे

फल - फूल

वन - उपवन

सुख - संपत्ति

धन - धाम

द्विरुक्ति शब्द (Repetition Words) :-

शत-शत

कोटी-कोटी

ASMA ZAUQIA
9901038590

I . एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

1. मातृ-भूमि कविता के कवि कौन हैं ?
   मातृ-भूमि कविता के कवि श्री भगवती चरण वर्मा हैं।
2. भगवतीचरण वर्मा जी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
   भगवतीचरण वर्मा जी का जन्म 30 अगस्त 1903 को उत्तर प्रदेश राज्य, उन्नाव ज़िले के शफ़ीपुर गाँव में हुआ था।
3. भगवतीचरण वर्मा जी ने कौन-कौनसी पत्रिकाओं का संपादन किया था ?
   भगवतीचरण वर्मा जी ने 'विचार 'और 'नवजीवन' पत्रिकाओं का संपादन किया था।
4. भगवतीचरण वर्मा जी के कौन से उपन्यास पर दो बार फ़िल्म-निर्माण हुआ ?
   भगवतीचरण वर्मा जी के 'चित्रलेखा' उपन्यास पर दो बार फ़िल्म-निर्माण हुआ।
5. भगवतीचरण वर्मा जी को कौन-से उपन्यास केलिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ?
   भगवतीचरण वर्मा जी को उनके 'भूले-बिसरे चित्र' उपन्यास केलिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।
6. भगवतीचरण वर्मा जी का देहांत कब हुआ ?
   भगवतीचरण वर्मा जी का देहांत 5 अक्तूबर 1981 को हुआ।
7. कवि किसे प्रणाम (नमन,वंदना) कर रहे हैं ?
   कवि मातृ-भूमि (भारत माता) को प्रणाम (नमन,वंदना) कर रहे हैं।
8. मातृ-भूमि के हृदय में कौन-कौन सोये हुए हैं ?
   मातृ-भूमि के हृदय (सीने) में गांधी, बुद्ध, और श्री राम जैसे महापुरुष सोये हुए हैं।
9. भारत के खेत कैसे हैं ?
   भारत के खेत सुंदर और हरे-भरे हैं।
10. वन-उपवन किस से युक्त हैं ?
    वन-उपवन फल-फूलों से युक्त हैं।
11. भारत भूमि के अंदर क्या-क्या भरा हुआ है ?
    भारत भूमि के अंदर खनिजों का व्यापक धन भरा हुआ है।
12. सुख-संपत्ति, धन-धाम को भारत माँ कैसे बाँट रही है ?
    सुख-संपत्ति, धन-धाम को भारत माँ अपने मुक्त हाथों से सबको एक समान बाँट रही है।
13. भारत माँ के हाथों में क्या है ?
    भारत माँ के हाथों में ज्ञान का दीप और न्याय की पताका है।

14.जग का रूप बदलने केलिए कवि किस से निवेदन करते हैं ?

जग का रूप बदलने केलिए कवि मातृ-भूमि (भारत माता) से निवेदन करते हैं।

15.आज माँ के साथ कौन हैं ?

आज माँ के साथ कोटि-कोटि जन हैं।

16.सभी ओर क्या गूँज उठा है ?

सभी ओर जय-हिंद का नाद गूँज उठा है।

17.जय-हिंद का नाद कहाँ-कहाँ पर गूँजना चाहिए ?

जय-हिंद का नाद विश्व के हर एक कोने, नगर और ग्राम में गूँजना चाहिए।

II . दो तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :-

1. मातृ-भूमि कविता का आशय क्या है ?

" जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी "अर्थात **" जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से बढ़कर है।** मातृ-भूमि कविता में देश प्रेम की झलक दिखाई देती है। कवि इस कविता के द्वारा मातृ-भूमि (भारत भूमि) की विशेषता तथा श्रेष्ठता का परिचय देते हुए छात्रों के मन में देश प्रेम का भाव जगाना चाहते हैं।

2. कवि ने भारत माता को अमरों की जननी क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए।

कवि ने भारत माता को अमरों की जननी कहा है, क्यों कि भारत में जन्म लेकर सत्य, अहिंसा, ज्ञान, बुद्धि, सहनशीलता, वचन को प्राणों से भी अधिक समझने वाले, अपने अच्छे कर्मों तथा साहस से देश का उद्धार करने वाले अमर योद्धा, महापुरुष तथा विभूतियाँ; जैसे- सत्य और अहिंसावादी गांधी जी, महाज्ञानी गौतम बुद्ध और मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री राम, भारत माँ के अमर सपूत माँ के हृदय में सोये हुए हैं।

3. भारत-माँ के प्रकृति-सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

कवि भारत माँ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि, भारत माँ के खेत सुंदर और हरे-भरे हैं। वन तथा उपवन फल-फूलों से युक्त हैं। भारत की भूमि में अपार खनिज संपत्ति भरी हुयी है। यह संपदा सुख और समृद्धि प्रदान है। भारत माँ अपने मुक्त हाथों से (उदार मन से) सुख-संपत्ति, धन-धाम और अपनी प्राकृतिक संपदा को एक समान जाति, धर्म, वर्ग तथा भाषा का भेद-भाव किए बिना बाँट रही है।

4. कवि के अनुसार मातृ-भूमि का स्वरूप कैसे सुशोभित है ?

(मातृ-भूमि कविता में कवि भारत माँ को कैसे चित्रित किया है ?)

भारत माँ के स्वरूप की पहचान कराते हुए कवि कह रहे हैं कि भारत की संस्कृति में हमेशा न्याय के मार्ग पर चलने की, और अज्ञान तथा अंधकार को ज्ञान के प्रकाश से मिटाने की प्रथा चलती आई है। कवि भारत-माँ से प्रार्थना कर रहे हैं कि जिस प्रकार माँ ने भारतवासियों को न्याय और ज्ञान के पथ पर

चलने के संस्कार दिए हैं, उसी तरह सारे जगत को भी अपनी शिक्षा और सभ्यता से बदल दे। और कवि की अपेक्षा है कि आज कोटि-कोटि भारत वासियों के जय हिंद का नाद समस्त विश्व के नगर और ग्राम में भी गूँजना चाहिए। यह कहते हुए कवि भारत मता को नमन कर रहे हैं।

III . अनुरूपता :-

1. वसीयत : नाटक : : चित्रलेखा : उपन्यास
2. शत-शत : द्विरुक्ति शब्द : : हरे-भरे : युग्म शब्द
3. एक हाथ में : न्याय पताका : : दूसरे हाथ में : ज्ञान दीप
4. हस्त : हाथ : : पताका : ध्वज
5. हरे-भरे और सुहाने : खेत : : फल-फूलों से युक्त : वन-उपवन

IV . जोड़कर लिखिए :-

1. तेरे उर में शायित	गांधी, बुद्ध, और, राम
2. फल फूलों से युत	वन-उपवन
3. एक हाथ में	न्याय पताका
4. कोटि-कोटि हम	आज साथ में
5. मातृ-भू	शत-शत बार प्रणाम
6. तेरे अंदर भरा हुआ है	खनिजों का कितना व्यापक धन

V . रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :-

1. कवि मातृभूमि को शत-शत बार प्रणाम कर रहे हैं।
2. भारत माँ के उर में गांधी, बुद्ध और राम सोये हुए हैं।
3. वन, उपवन फल-फूलों से युक्त हैं।
4. मुक्त हस्त से मातृ-भूमि सुख संपत्ति बाँट रही है।
5. सभी ओर जय-हिंद का नाद गूँज उठे।

VI . भावार्थ लिखिए :-

एक हाथ में न्याय-पताका,
ज्ञान-दीप दूसरे हाथ में,
जग का रूप बदल दे, हे माँ,
कोटि-कोटि हम आज साथ में।
गूंज उठे जय-हिंद नाद से-
सकल नगर और ग्राम,
मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम।

संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियों को हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि भगवतीचरण वर्मा जी के द्वारा रचित "मातृभूमि" पद्य से लिया गया है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कवि ने भारत माँ के स्वरूप का वर्णन किया है।

व्याख्या :- प्रस्तुत कविता भाग में कवि भारत माँ के स्वरूप का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि भारत माँ के एक हाथ में न्याय पताका और दूसरे हाथ में ज्ञान का दीप है। जैसे भारत माँ ने भारतवासियों को न्याय और ज्ञान के पथ पर चलने के संस्कार दिये हैं, उसी तरह कवि जग का रूप भी बदलने केलिए माँ से प्रार्थना कर रहे हैं। और कवि यह चाहते हैं कि आज कोटि-कोटि भारत वासियों के जय हिन्द का नाद समस्त विश्व के नगर और ग्राम में भी गूंजना चाहिए। यह कहते हुए कवि भारत-माता को सौ-सौ बार प्रणाम कर रहे हैं।

जीवन मूल्य :- हमें अन्याय, अज्ञान तथा अंधकार को मिटाने केलिए सदैव ज्ञान और न्याय के मार्ग पर चलना चाहिए।

VII .पद्यभाग को पूर्ण कीजिए :-

हरे-भरे हैं खेत सुहाने,
फल-फूलों से युत वन-उपवन,
तेरे अंदर भरा हुआ है
खनिजों का कितना व्यापक धन।
मुक्त हस्त तू बाँट रही है
सुख-संपत्ति, धन-धाम,
मातृ-भू शत-शत बार प्रणाम।

ASMA ZAUQIA
9901038590

याद रखिए :-

- मातृ-भूमि कविता के कवि श्री भगवती चरण वर्मा हैं।
- कवि मातृ-भूमि (भारत माता) को प्रणाम (नमन, वंदना) कर रहे हैं।
- मातृ-भूमि के सीने (हृदय) में गांधी, बुद्ध, और श्री राम जैसे महापुरुष सोये हुए हैं।
- भारत के खेत सुंदर और हरे-भरे हैं। वन-उपवन फल-फूलों से युक्त हैं।
- भारत भूमि के अंदर खनिजों का व्यापक धन भरा हुआ है।
- सुख-संपत्ति, धन-धाम को भारत माँ अपने मुक्त हाथों से सबको एक समान बाँट रही है।
- भारत माँ के हाथों में ज्ञान का दीप और न्याय की पताका है।
- जग का रूप बदलने केलिए कवि मातृ-भूमि (भारत माता) से निवेदन करते हैं।
- आज माँ के साथ कोटि-कोटि जन हैं।
- सभी ओर जय-हिंद का नाद गूँज उठा है।
- जय-हिंद का नाद विश्व के हर एक कोने, नगर और ग्राम में गूँजना चाहिए।

कविता से आगे :-

1. देश भक्ति से संबंधित कोई कन्नड़ या हिंदी कविता को कक्षा में प्रस्तुत करना।
   - https://youtu.be/uGgxde0sgdU
   - https://youtu.be/blghE16fElo
2. हिंदी की अन्य देश भक्ति कविताओं की चर्चा करना।
   - 9वीं कक्षा की जय-जय भारतमता
   - 8वीं कक्षा के पुराने पाठ्यक्रम से भारत माता

ASMA ZAUQIA
9901038590

अभिनव मनुष्य

-रामधारीसिंह 'दिनकर'

आज की दुनियाँ विचित्र, नवीन;
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।
है बँधे नर के करों में वारि, विद्युत, भाप,
हुक्म पर चढ़ता-उतारता है पवन का ताप।
हैं नहीं बाकी कहीं व्यवधान
लाँघ सकता नर सरित गिरि सिंधु एक समान।
यह मनुज,
जिसका गगन में जा रहा है यान,
काँपते जिसके कारों को देख कर परमाणु।
यह मनुज, जो सृष्टि का शृंगार,
ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार।
व्योम से पाताल तक सब कुछ इसे है ज्ञेय,
पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय।
श्रेय उसका , बुद्धि पर चैतन्य उर की जीत,
श्रेय मानव की असीमित मानवों से प्रीत;
एक नर से दूसरे के बीच का व्यवधान
तोड़ दे जो, बस, वही ज्ञानी, वही विद्वान,
और मानव भी वही।

ASMA ZAUQIA
9901038590

कवि परिचय :-

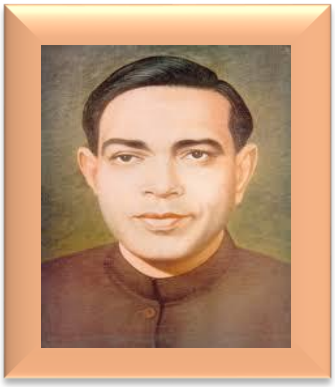

- रामधारीसिंह 'दिनकर'

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर जी का जन्म 23 सितंबर ई.सन् 1908 को बिहार प्रांत के बेगुसराई ज़िले के सिमरिया गाँव में हुआ था। दिनकर जी हिंदी साहित्य - आधुनिक काल के सर्वश्रेष्ठ लेखक, कवि, तथा निबंधकार थे। वे स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में जाने जाते थे; और स्वतंत्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गए। बी.ए की उपाधि प्राप्त करने के बाद वे रेडियो विभाग में काम करते थे। बाद में एक सरकारी कॉलेज के प्राध्यापक बने। आगे चलकर वे भारत सरकार के राज्य सभा के सदस्य और हिंदी सलाहकार के पद पर नियुक्त हुए। तदुपरान्त भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बने। दिनकर जी कवि, निबंधकार, व्यंग्यकार, साहित्य-आलोचक, पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी तथा संसद सदस्य के रूप में देश की सेवा करते रहे। 24 अप्रैल ई.सन् 1974 को इनका देहावसान हुआ।

राष्ट्र कवि दिनकर जी को 1959 में पद्मभूषण तथा इनके साहित्य के चार अध्याय को साहित्य अकादमी अवार्ड, 1968 में राजस्थान विद्यापीठ ने उनहें साहित्य-चूड़ममणि से सम्मानित किया। और 1972 को उनकी कृति 'उर्वशी' को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। एक ओर उनकी कविताओ में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तिय का चरमओत्कर्ष हमें उनकी कुरुक्षेत्र और उर्वशी नामक कृतियों में मिलता है।

कवि दिनकर जी की कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं - हँकार, रेणुका, रसवंती, सामधेनी, धूपछाँह, कुरुक्षेत्र, बापू, रश्मीरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, उर्वशी आदि। दिनकर जी की हर रचना में हृदय को प्रभावित और उत्साहित करने की पूर्ण शक्ति है। इनकी भाषा सजीव और विषय के अनुकूल है। 'अभिनव मनुष्य' पद्य भाग को 'कुरुक्षेत्र' के षष्ठ सर्ग से लिया गया है।

ASMA ZAUQIA
9901038590

कविता का आशय तथा भावार्थ

इस पद्य भाग में कवि दिनकर जी ने एक ओर आधुनिक युग में मनुष्य की भौतिक साधना तथा प्रगति और वैज्ञानिक क्षेत्र में अतुल्य और अद्‌वितीय आविष्कारों का विश्लेषण किया है; तो दूसरी ओर मनुष्य की सिद्‌धि और मानवीयता के वास्तविक गुणों का परिचय दिया है। कवि दिनकर जी इस कविता द्‌वारा यह संदेश देना चाहते हैं कि आज के मानव ने प्रकृति के हर तत्व जैसे; पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, पर विजय प्राप्त कर ली है। परंतु कैसी विडंबना है कि उसने स्वयं को नहीं पहचाना, अपने भाईचारे को नहीं समझा। प्रकृति पर विजय प्राप्त करना मनुष्य की साधना है, मानव मानव के बीच स्नेह का बांध बांधना मानव की सिद्‌धि है। जो मानव दूसरे मानव से प्रेम का रिश्ता जोड़ कर आपस की दूरी को मिटाए, वहीं मानव कहलाने का अधिकारी होगा। इस कविता द्‌वारा "वसुधैव कुटुंबकम्" अर्थात सारे विश्व को अपना परिवार मानकर; स्नेह, मानवीयता, भाईचारा, आदि जीवन मूल्यों का महत्व समझ सकते हैं।

कविता की प्रथम पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि आज की दुनिया विचित्र (विस्मित करनेवाली) और नवीन (नई) है। अर्थात मनुष्य ने अपनी बुद्‌धि तथा ज्ञान से विज्ञान में नये-नये अतुल्य और अद्‌वितीय आविष्कारों को खोजकर प्रकृति के हर तत्व, हर दिशा, हर जगह, पर हर तरीके से विजय पाकर प्रकृति को अपने वश में कर रखा है।

कवि कहते हैं कि आज मनुष्य के हाथों में वारि (पानी), विद्‌युत (बिजली/ऊर्जा), और भाप (वाष्प) बंधे हुए हैं। अर्थात मनुष्य अपनी वैज्ञानिक बुद्‌धि का प्रयोग करके समुद्र, नदी-नालों के प्रवाह को रोकने के लिए विभिन्न प्रकार की तकनीकों की खोज की है (जैसे; बाँधों का निर्माण, वर्षा के जल को संग्रह करने के लिए, तालाब, झील, नाला, और बैरल, टैंकों का निर्माण, जल के बहाव को रोकने के लिए नल की खोज), बड़े-बड़े बाँधों का निर्माण कर विद्‌युत-ऊर्जा (बिजली) उत्पन्न कर रहा है और उस ऊर्जा को भी नियंत्रित करने केलिए कई प्रकार के साधन ढूँढ निकले हैं (जैसे; बिजली के तरंगों को नियंत्रित करने केलिए स्विच बटन, रिले परिक्रमा, सोलनोइड बटन, स्टेबलाइज़र (स्थिरक-यंत्र) इत्यादि) और मनुष्य ने वाष्प को भी नियंत्रण करने की नयी तकनीकें, रासायनिक द्रव्य और साधन बना लिए (जैसे; स्टीम इंजिन, बॉयलर, कुक्कर, यहाँ तक के कृत्रिम वारिधर (बादल) बनाने की विधियाँ भी खोज निकाली)।

कवि आगे कहते हैं कि आज मनुष्य के निर्देशानुसार पवन (हवा) तापमान भी बढ़ता-घटता है (जैसे; बिजली के पंखे, ए.सी, हीटर.,आदि) कवि कहते हैं कि आज मनुष्य को कहीं भी किसी भी प्रकार की रुकावट या बधा नहीं है; बिना रुकावट के मानव विशाल-समुद्र, ऊँचे से ऊँचा पर्वत और नदियों को पल-भर में लाँघ सकता है (विमान, रॉकेट, और मिसाईल के माध्यम से पार कर सकता है)।

आगे की पंक्तियों में कवि कहते हैं कि मनुष्य ने वैज्ञानिक क्षेत्र में इतनी प्रगति कर ली है कि आज गगन में उसका बनाया हुआ यान (वाहन जैसे; विमान, रॉकेट, मिसाईल, आदि) स्वयं प्रस्थान कर रहा है। कवि ने अपनी सूक्ष्म कल्पना से यह अभिव्यक्त किया है कि मनुष्य इतना पराक्रमी बन गया है; स्वयं परमाणु उसके हाथों को देख कर काँप रहे हैं; अर्थात मनुष्य ने विनाशक तथा विध्वंसक परमाणु का आविष्कार तो किया परंतु एक क्षण भी नहीं सोचा कि उसके घातक परिणाम प्रकृति तथा प्राकृतिक-जीवों को ही सहना पढ़ेगा। कहीं मनुष्य इसका प्रयोग न करदे यह सोच कर परमाणु भी काँप रहे हैं।

आगे कवि यह कहना चाहते हैं कि आज का मानव अपनी भौतिक साधना के कारण इस सृष्टि को सुंदर बननेवाला शृंगारकर्ता बन गया है, ज्ञान और विज्ञान के प्रकाश का भंडार है। जिसे अंतरिक्ष से लेकर पाताल तक पूरे ब्रह्मांड का ज्ञात है। प्रकृति के हर तत्व ने (जैसे; पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश) मानव के समक्ष सारे रहस्य खोल दिये; अब उससे कुछ छुपा नहीं है। पर क्या यह मानव की सही पहचान है? नहीं यह मानव की सही पहचान नहीं है; और न ही उसकी उत्तम प्रकृति, दुर्लभ उपलब्धि या सिद्धि है।

वास्तव में मनुष्य का श्रेय अथवा यश; चैतन्य पर उर की जीत है; अर्थात बुद्धि से हृदय श्रेष्ठ होता है; अतः बुद्धि पर हृदय की जीत ही मनुष्यता का सही परिचय है। मनुष्य का श्रेय मानव-मानव के बीच स्नेह का बाँध बाँधना, सौहार्द्रता, आत्मीयता तथा प्रेम से रहना; आपसी दूरियाँ और भेद-भाव मिटाना और मानव-मानव के बीच जो जाति, धर्म, वर्ग तथा भाषा का अवरोध है (जो रुकावट है) उस बाधा को जो तोड़ देता है, जो मानव दूसरे मानव से प्रेम का रिश्ता जोड़कर आपस की दूरी को मिटाए वही वास्तव में ज्ञानी, विद्वान और सच्चा मानव या मानव कहलाने का अधिकारी है।

शब्दार्थ :-

दुनियाँ - संसार, जगत ಜಗತ್ತು, ವಿಶ್ವ	बाक़ी - शेष ಬಾಕಿ, ಉಳಿದ	प्रीत - दया, स्नेह, प्यार ದಯೆ, ಸ್ನೇಹ, ಪ್ರೀತಿ
विचित्र - आश्चर्यजनक, अनोखा ವಿಚಿತ್ರ, ಅದ್ಭುತ	व्यवधान - रुकावट, बाधा ಅಡಚಣೆ	व्योम - आकाश, ब्रह्मांड ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ
नवीन - नया, आधुनिक ಆಧುನಿಕ, ನವೀನ	लाँघना - पार करना, छलाँग लगाना ಜಿಗಿಯುವುದು	पाताल - वितल, अगाध गर्त, खोह ಪಾತಾಳ
प्रकृति - भौतिक संसार ಪ್ರಕೃತಿ, ಭೌತಿಕ ಜಗತ್ತು	सरित - नदी ನದಿ	ज्ञेय - बोध्य, ज्ञात ತಿಳಿದಿದೆ
सर्वत्र - हर जगह ಎಲ್ಲೆಡೆ	ताप - तापमान ತಾಪಮಾನ	श्रेय - प्रसिद्धि, श्रेष्ठता, योग्यता ಶ್ರೇಷ್ಠತೆ

विजय - जीत, सफल ಸಫಲ	गिरि - पर्वत ಪರ್ವತ ಗಿರಿ	चैतन्य - समझ, चेतना, संवेदन ಚೈತನ್ಯ
आसीन - विराजमान ಆಸೀನ	सिंधु - समुद्र ಸಮುದ್ರ	परिचय - धारणा, विचार, भाव ಪರಿಚಯ
बँधे - बाँध, बंधक, बेड़ी ಬಂಧ, ಕಟ್ಟಿಹಾಕಿರುವ	मनुज - मनुष्य ಮಾನವ, ಮನುಷ್ಯ	उर - हृदय ಹೃದಯ
नर - पुरुष ಪುರುಷ	गगन - आकाश ಗಗನ, ಆಕಾಶ	असीमित - अनियंत्रित, निरंकुश ಅನಿಯಮಿತ, ನಿರಂಕುಶ
कर - हाथ ಕೈ, ಹಸ್ತ	यान - वाहन ವಾಹನ	सृष्टि - सृजन ಸೃಷ್ಟಿ
वारि - पानी, जल ಜಲ, ನೀರು	विद्युत - बिजली, ऊर्जा ವಿದ್ಯುತ್	विद्वान - पांडित्व पूर्ण, साक्षर ವಿದ್ವಾಂಸ
भाप - वाष्प ಆವಿ	शृंगार - अलंकरण, मंडन, सजावट ಶೃಂಗಾರ	काँपना - चौंक, कंपन, थरथराना ನಡುಕ, ಕಂಪನ
हुक्म - आदेश ಆದೇಶ	आलोक - प्रकाश, दीपक, रोशनी ಬೆಳಕು, ಪ್ರಕಾಶ	ज्ञान - बुद्धि, प्राज्ञा, विद्या ಜ್ಞಾನ
पवन - हवा ಗಾಳಿ	आगार - भंडार, खज़ाना, ಭಂಡಾರ, ಖಜಾನೆ	ज्ञानी - मनीषी, संत, पंडित ಜ್ಞಾನಿ
परमाणु - सबसे छोटा अंश जिससे बम बनाया जाता है ಪರಮಾಣು	विज्ञान - एक विषय जिस में क्रमबद्ध और व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया जाता है ವಿಜ್ಞಾನ	

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

1. अभिनव मनुष्य कविता के कवि कौन हैं ?

   भिनव मनुष्य कविता के कवि श्री.रामधारीसिंह दिनकर हैं।

2. दिनकर जी का जन्म कब हुआ ?

   दिनकर जी का जन्म 23 सितंबर ई. सन् 1908 को हुआ।

3. दिनकर जी का देहांत कब हुआ ?

   दिनकर जी का देहांत 24 अप्रैल ई. सन् 1974 को हुआ।

4. अभिनव मनुष्य पद्य भाग को किससे लिया गया है ?

अभिनव मनुष्य पद्य भाग को 'कुरुक्षेत्र' के षष्ठ सर्ग से लिया गया है।

5. अभिनव मनुष्य कविता में किसका विश्लेषण किया गया है ?

अभिनव मनुष्य कविता में आधुनिक मानव की भौतिक साधना का विश्लेषण किया गया है।

6. आज की दुनियाँ कैसी है ?

आज की दुनियाँ विचित्र और नवीन है।

7. आधुनिक मानव ने किस पर विजय पायी (प्राप्त करली) है ?

आधुनिक मानव ने प्रकृति के सारे तत्वों पर विजय पायी (प्राप्त करली) है।

8. नर के करों में क्या-क्या बंधे हुए हैं ?

नर के करों में वारि, विद्युत, भाप बंधे हुए हैं।

9. आधुनिक मानव के हुक्म पर क्या चढ़ता-उतरता है ?

आधुनिक मानव के हुक्म पर पवन का ताप चढ़ता-उतरता है।

10. मानव एक समान क्या-क्या लाँघ सकता है ?

मानव एक समान नदी, पर्वत, और समुद्र को लाँघ सकता है।

11. आज मनुष्य का यान कहाँ जा रहा है ?

आज मनुष्य का यान गगन में जा रहा है।

12. परमाणु किसे देख कर काँप रहे हैं ?

परमाणु मनुष्य के हाथों को देख कर काँप रहे हैं।

13. मनुष्य किसका शृंगार है ?

मनुष्य सृष्टि का शृंगार है।

14. आधुनिक मानव को किसका आगार कहा गया है ?

आधुनिक मानव को ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का, आगार कहा गया है।

15. आधुनिक मानव को क्या-क्या जानकारी प्राप्त है ?

आधुनिक मानव को अंतरिक्ष से लेकर पाताल तक की सारी जानकारी प्राप्त है।

16. मनुष्य की बुद्धि पर किसकी जीत होनी चाहिए ?

मनुष्य की बुद्धि पर हृदय की जीत होनी चाहिए।

17. जो मानव, दूसरे मानव के बीच का व्यवधान तोड़ देता है वह क्या कहलता है ?

जो मानव, दूसरे मानव के बीच का व्यवधान तोड़ देता है वही ज्ञानी, विद्वान, तथा मानव कहलता है।

ASMA ZAUQIA
9901038590

II . दो तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :-

1. कवि दिनकर जी के अनुसार मानव का सही परिचय क्या है ?
   - कवि दिनकर जी के अनुसार कौन मानव कहलता है ?
   - अभिनव मनुष्य कविता में दिनकर जी क्या संदेश देना चाहते हैं ?
   - अभनव मनुष्य कविता से क्या सीख मिलती है ?
   - कवि दिनकर जी के अनुसार मानव का सही श्रेय क्या है ?

   बुद्धि पर हृदय की जीत ही मनुष्यता का सही परिचय या श्रेय है। मानव-मानव के बीच स्नेह का बाबाँधना, सौहार्द्रता, आत्मीयता तथा प्रेम से रहना, आपसी दूरियाँ और भेद-भाव मिटाना, और मानव मानव के बीच जो जाति, धर्म, वर्ग तथा भाषा का अवरोध है उस बाधा को जो तोड़ देता है, जो मानव दूसरे मानव से प्रेम का रिश्ता जोड़कर आपस की दूरी को मिटाए वही वास्तव में ज्ञानी, विद्वान और सच्चा मानव या मानव कहलाने का अधिकारी है।
2. 'प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन' - इस पंक्ति का आशय समझाइए।

   मनुष्य ने अपनी बुद्धि तथा ज्ञान से विज्ञान में नये-नये अतुल्य और अद्वितीय आविष्कारों को खोजकर प्रकृति के हर तत्व, हर दिशा, हर जगह, पर हर तरीके से विजय पाकर प्रकृति को अपने वश में कर रखा है और प्रकृति पर विराजमान है।
3. 'पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय' - इस पंक्ति का आशय समझाइए।

   कवि के अनुसार मानव की भौतिक साधना जैसे कि - प्रकृति के सारे तत्वों पर विजय पाना, वारि, विद्युत, भाप को अपने वश में कारना, अन्तरिक्ष यान या वायु यान बनाना, परमाणु का आविष्कार करना, अंतरिक्ष से पाताल तक के सारे रहस्य जानना, प्रकृति का भौतिक अलंकरण करना पर अपने भाईचारे को, आपसी प्रेम को ही भला देना, मानव का सही परिचय या श्रेय नहीं है।
4. मानव की भौतिक साधना का परिचय दीजिये।

   कवि के अनुसार प्रकृति के सारे तत्वों पर विजय पाना, वारि, विद्युत, भाप को अपने वश में कारना, अन्तरिक्ष यान और वायु यान बनाना, परमाणु का आविष्कार करना, अंतरिक्ष से पाताल तक के सारे रहस्य जानना, प्रकृति का भौतिक अलंकरण करना ज्ञान और विज्ञान के प्रकाश का खज़ाना बनना मानव की भौतिक साधना है।
5. परमाणु नर के कारों को देख कर क्यों कांपते हैं ?

   मनुष्य ने विनाशक तथा विध्वंसक परमाणु का आविष्कार तो खोज लिया, परंतु उसने एक क्षण भी नहीं सोचा कि उसके घातक परिणाम प्रकृति तथा प्राकृतिक-जीवों को ही सहना पढ़ेगा। कहीं मनुष्य इस विध्वंसक का प्रयोग न करदे यह सोच कर स्वयं परमाणु भी काँप रहे हैं।

6. अभिनव मनुष्य कविता का दूसरा कौनसा शीर्षक होसकता है ? और क्यों ?

अभिनव मनुष्य कविता का दूसरा शीर्षक नवीनीकरण पुरुष होसकता है। क्यों कि आजका मानव इतना बुद्धिमान बन गया है कि, हर पल विज्ञान में नये-नये आविष्कारों को खोज के प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है।

III . भावार्थ लिखिए :-

यह मनुज, जो सृष्टि का शृंगार,

ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार।

व्योम से पाताल तक सब कुछ इसे है ज्ञेय,

पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय।

संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियों को हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि रामधारीसिंह 'दिनकर' जी के द्वारा रचित "अभिनव मनुष्य" पद्य भाग 'कुरुक्षेत्र' के षष्ठ सर्ग से लिया गया है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि मानव की भौतिक साधना उसकी सिद्धि का परिचय नहीं है।

व्याख्या :- प्रस्तुत कविता भाग में कवि यह कहना चाहते हैं कि आज का मानव अपनी भौतिक साधना से इस सृष्टि को अलंकरण अर्थात सजा दिया है, ज्ञान और विज्ञान के प्रकाश का भंडार बन गया है। आजके मानव को अंतरिक्ष से लेकर पाताल तक पूरे ब्रह्मांड का ज्ञात होगया है। कवि दिनकर जी कहते हैं कि यह मानव की सही पहचान नहीं है न ही उसकी उत्तम प्रकृति या सिद्धि है।

IV . तुकांत शब्द (Rhyming Words) :-

नवीन - आसीन

व्यवधान - समान

शृंगार - आगार

ज्ञेय - श्रेय

जीत - प्रीत

ASMA ZAUQIA
9901038590

V . पद्यभाग को पूर्ण कीजिए :-

आज की दुनियाँ विचित्र, नवीन;

प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।

है बँधे नर के करों में वारि, विद्युत, भाप,

हुक्म पर चढ़ता-उतारता है पवन का ताप।

VI . पर्यायवाची शब्द लिखिए (Synonyms) :-

दुनियाँ	जगत	विचित्र	आश्चर्यजनक
नवीन	नया	नर	पुरुष
वारि	जल	कर	हाथ
आगार	भंडार	व्यवधान	रुकावट
सिंधु	समुद्र	सरित	नदी
श्रेय	प्रसिद्धि	अभिनव	आधुनीक
उर	हृदय	चैतन्य	समझ
आसीन	विराजमान	हुक्म	आदेश

VII . विलोन शब्द लिखिए (Antonyms) :-

आज	X	कल	नवीन	X	प्राचीन	परिचय	X	अपरिचय
चढ़ता	X	उतरता	समान	X	आसमान	श्रेय	X	प्रेय
ज्ञान	X	अज्ञान	जीत	X	हार	चैतन्य	X	अचैतन्य
असीमित	X	सीमित	तोड़	X	जोड़	प्रीत	X	द्वेष
विजय	X	पराजय	मानव	X	दानव	व्योम	X	पाताल

VIII . एकल शब्द लिखिए (OneWord) :-

सभी जगहों में - सर्वत्र	मनु की संतान - मनुज
आसान पर बैठा हुआ - आसीन	विशेष ज्ञान - विज्ञान
बचा हुआ - बाक़ी	अधिक विद्या प्राप्त - ज्ञानी

IX . अनुरूपता (Anology) :-

मातृभूमि : भगवतीचरण वर्मा : : अभिनव मनुष्य : श्री.रामधारीसिंह दिनकर

गिरि : पर्वत : : वारि : जल

पवन : वायु : : भाप : वाष्प

ज़मीन : आसमान : ; आकाश : पाताल

कर : हाथ : : उर : हृदय

सिंधु : समुद्र : : सरित : नदी

परमाणु : कांपते हैं : : पवन का ताप : चढ़ता-उतरता है

याद रखिए :-

- अभिनव मनुष्य कविता के कवि श्री.रामधारीसिंह दिनकर हैं।
- अभिनव मनुष्य पद्य भाग को 'कुरुक्षेत्र' के षष्ठ सर्ग से लिया गया है।
- अभिनव मनुष्य कविता में आधुनिक मानव की भौतिक साधना का विश्लेषण किया गया है।
- आज की दुनियाँ विचित्र और नवीन है।
- आधुनिक मानव ने प्रकृति के सारे तत्वों पर विजय पायी (प्राप्त करली) है।
- नर के करों में वारि, विद्युत, भाप बंधे हुए हैं।
- आधुनिक मानव के हुक्म पर पवन का ताप चढ़ता-उतरता है।
- मानव एक समान नदी, पर्वत, और समुद्र को लाँघ सकता है।
- आज मनुष्य का यान गगन में जा रहा है।
- परमाणु मनुष्य के हाथों को देख कर काँप रहे हैं।
- मनुष्य सृष्टि का शृंगार है।
- आधुनिक मानव को ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का, आगार कहा गया है।
- आधुनिक मानव को अंतरिक्ष से लेकर पाताल तक की सारी जानकारी प्राप्त है।
- मनुष्य की बुद्धि पर हृदय की जीत होनी चाहिए।
- जो मानव, दूसरे मानव के बीच का व्यवधान तोड़ देता है वही ज्ञानी, विद्वान, तथा मानव कहलता है।

ASMA ZAUQIA
9901038590

कविता से आगे :-

- दिनकर जी की अन्य काव्य-कृतियों का परिचय प्राप्त कीजिए।

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%B9_%27%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A4%95%E0%A4%B0%27

- " मानव की सही पहचान बुद्धि व तर्क नहीं परंतु मानवीयता है।" इस विषय पर कक्षा में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

ASMA ZAUQIA
9901038590

तुलसी के दोहे

-गोस्वामी तुलसीदास

१. “ मुखिया मुख सों चाहिए, खान पान को एक।
पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक॥“

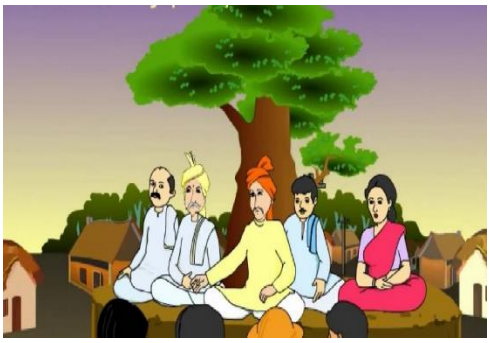

२. “ जड़ चेतन, गुण-दोषमय, विस्व कीन्ह करतार।
संत-हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार॥"

३. “ दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छाँडिये, जब लग घट में प्राण॥"

४. “ तुलसी साथी विपत्ति के, विद्या विनय विवेक।
साहस सुकृति सुसत्यव्रत, राम भरोसों एक॥"

५. “ राम नाम मनी दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतार बाहिरौ, जो चाहसी उजियार॥"

ASMA ZAUQIA
9901038590

कवि परिचय :-

-गोस्वामी तुलसीदास

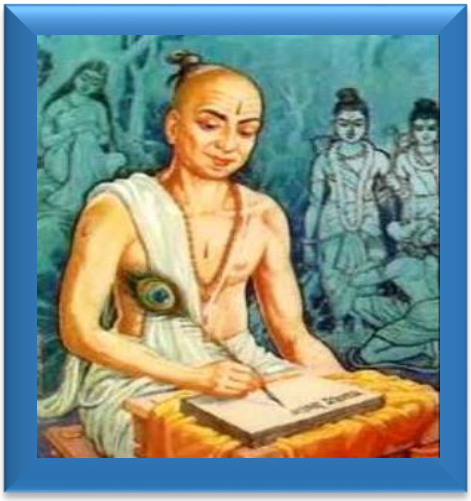

गोस्वामी तुलसीदास जी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। तुलसी का जन्म सन् 1532 में उत्तर प्रदेश के राजपुर में हुआ था। उनके पिता का नाम आत्मराम और माता का नाम हुलसी था। कहा जाता है कि जब तुलसीदास का जन्म हुआ, तब उनहों ने राम नाम का उच्चारण किया था। इसलिए उनके बचपन का नाम 'रामबोला' पड़ा। तुलसीदास भगवान राम के अनन्य भक्त थे।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, गीतावली, कवितवली, दोहावली, आदि। सन् 1623 को काशी में उनका देहांत हुआ।

ASMA ZAUQIA
9901038590

दोहों का आशय तथा भावार्थ

तुलसीदास इन दोहों के द्वारा समाज को अच्छे कर्म तथा नैतिकता से जीवन बिताने का संदेश देना चाहते हैं।

तुलसीदास जी मुँह और मुखिया दोनों के स्वभाव की समानता दर्शाते हुए लिखते हैं कि मुखिया को मुख के समान होना चाहिए। जैसे मुँह खाने-पीने का काम अकेला करके पूरे शरीर का पालन-पोषण करता है वैसे ही मुखिया को भी विवेकवान होना चाहिए कि वह काम अपनी तरह से करे लेकिन उसका फल सभी में बाँटे। तुलसीदास जी ने यह संदेश दिया है कि हमें अपने विवेक से और निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

सृष्टिकर्ता ने इस इस संसार को जड़ -चेतन और गुण -दोष अर्थात (सार-निसार), समझ-नासमझ सब मिलाकर बनाया है। तुलसीदास जी हंस पक्षी के साथ संत की तुलना करते हुए उसके स्वभाव का परिचय देते हैं कि, जैसे हंस पक्षी दूध में मिले पानी को त्याग कर केवल दूध ही ग्रहण करता है, वैसे ही हंस रूपी साधु लोग विकारों को छोड़ कर अच्छे गुणों को अपनाते हैं। अतः हमें विकारों को त्याग कर अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए।

दया एक दैवि गुण है, जिस पर सभी धर्मों कि रूप रेखा स्थिर है। दया के बिना कोई भी धर्म धर्म कहलने के योग्य नहीं। इसी तथ्य को व्यक्त करते हुए तुलसीदास ने लिखा है कि दया ही अपने आप में सबसे बड़ा धर्म है, जिसका आचरण करने से मनुष्य के आत्मा का विकास होता है। और अहंकार पाप का मूल है। अतः जब तक मनुष्य के शरीर में प्राण हैं , तब तक मनुष्य को अपना अभिमान (अहंकार) छोड़कर दयालु बने रहना चाहिए। हिंसा, द्वेष, बैर, विरोध, अहंकार, की भीषण लपटें दया का स्पर्श पाकर शांत हो जती हैं। इसीलिए हमें जीवन भर दयावान बनकर रहना चाहिए।

तुलसीदास जी ने बताया है कि मनुष्य पर जब संकट आता है तब विद्या, विनय, विवेक, साहस, अच्छे कर्म, और हमेशा सत्या बोलने का स्वभाव ही उसका साथ निभाते हैं। अर्थात उसे अपनी बुद्धि, ज्ञान, और विनम्रता से काम लेना चाहिए। मनुष्य को अपने साहस, अच्छे कर्मों, तथा सत्य बोलने के स्वभाव के साथ-साथ राम पर भरोसा रखना चाहिए। अतः हमें बुद्धि, ज्ञान, विनम्रता, साहस, अच्छे कर्म, और सत्य, इन अच्छे गुणों से संकट का सामना करने के साथ-साथ राम पर भरोसा रखना चाहिए।

जिस तरह देहरी पर दिया रखने से घर के भीतर तथा बाहर (आँगन में) प्रकाश फैलता है उसी तरह राम नाम राम-नाम जपने से मानव की आंतरिक और बाह्य शुद्धि होती है। जिस से मनुष्य जीवन में चारों ओर प्रकाश फैलता है। तुलसीदास जी कहते हैं कि हे मनुष्य अगर तुम भीतर और बाहेर दोनों ओर उजाला चाहते

हो तो मुख रूपी द्वार की जीभ रूपी दहलीज़ पर राम नाम रूपी मानिदीप को रखो। अतः हमें हमेशा भगवान के नाम का जप करते रहना चाहिए।

शब्दार्थ :-

मुखिया - नेता ಮುಖ್ಯಸ್ಥ	संत - साधु, सन्यासी ಸಂತರು, ಸನ್ಯಾಸಿಗಳು	विद्या - शिक्षा, ज्ञान, जानकारी ವಿದ್ಯೆ, ಜ್ಞಾನ
मुख - मुँह ಬಾಯಿ	हंस - पक्षी ಹಂಸ ಪಕ್ಷಿ	विनय - शिष्टता, विनम्रता ವಿನಯ, ವಿನಮ್ರತೆ
सों - इस प्रकार ಈ ಪ್ರಕಾರ	गहहिं - ग्रहण ಗ್ರಹಿಸುವುದು	विवेक - ज्ञान, बुद्धि ಜ್ಞಾನ, ಬುದ್ಧಿ
खान - पान, खाना-पानी ತಿನ್ನುವುದು ಮತ್ತು ಕುಡಿಯುವುದು	पय - दूध ಹಾಲು	साहस - वीरता, हिम्मत, निडरता ಸಾಹಸ
करतार - सृष्टिकर्ता ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತ, ಬ್ರಹ್ಮ	परिहारी - त्यागना ತ್ಯಾಗ	सुकृति - अच्छे कर्म ವಳ್ಳೆಯ ಕರ್ಮ
पालै - पालन ಪಾಲನೆ	वारी - जल ಜಲ	सुसत्यव्रत - सत्यवादी ಸತ್ಯವಾದಿ
पोसै - पोषण ಪೋಷಣೆ	विकार - दोष-युक्त ವಿಕಾರಗಳು, ದೋಷವುಳ್ಳ	भरोसो - भरोसा ನಂಬಿಕೆ
सकल - संपूर्ण ಸಂಪೂರ್ಣ	दया - करुणा, अनुग्रह ದಯೆ, ಕರುಣೆ	मनि - मनक ಮಣಿ
अंग - शरीर के भाग ಶರೀರದ ಅಂಗಗಳು	धर्म - ईश्वरीय उपासना, आराधना ಧರ್ಮ, ಆರಾಧನೆ	दीप - दीपक ದೀಪ
सहित - समेत, साथ ಜೊತೆ	मूल - उद्गम, जड़ ಮೂಲ	धरु - धारण करना ಧಾರಣೆಮಾಡುವುದು
विपत्ति - संकट ಸಂಕಟ	पाप - अशुभ, नीच ನೀಚ, ಅಶುಭ	जीह - जीभ ನಾಲಿಗೆ
जड़ - मंद बुद्धि, चेतना रहित ಮಂದ ಬುದ್ಧಿ	अभिमान - अहंकार ಅಹಂಕಾರ	देहरी - दहलीज़ ಮನೆ ಹೊಸ್ಲು
चेतन - बुद्धि ಬುದ್ಧಿ	न छाँडिये - न छोड़िए ಬಿಡ ಬೇಡಿ	द्वार - दरवाज़ा ಬಾಗಿಲು, ದ್ವಾರ

गुण - श्रेष्ठता, खूबी ಗುಣ	जब लग - जब तक ಇರುವ ವರೆಗೆ	भीतर - अंदर ಒಳಗೆ
दोषमय - कमी, विकृति ದೋಷಯುಕ್ತ	घट - शरीर ಶರೀರ	बाहिरौ - बाहर ಹೊರಗೆ
विस्व - विश्व ವಿಶ್ವ	प्राण - जीवन, सांस, दम ಪ್ರಾಣ	चाहसी - चारों ओर ನಾಲ್ಕು ಕಡೆ
कीन्ह - किया ಮಾಡಿದ	साथी - मित्र, जोडकार, सखा ಮಿತ್ರ, ಸಖ	उजियार - उजाला, प्रकाश ಬೆಳಕು, ಪ್ರಕಾಶ

I . एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

1. गोस्वामी तुलसीदास कौन थे ?
   गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि थे।
2. तुलसीदास का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
   तुलसीदास का जन्म सन् 1532 को उत्तर प्रदेश के राजापुर में हुआ।
3. तुलसीदास के बचपन का नाम रामबोला क्यों पड़ा ?
   कहा जाता है कि तुलसीदास ने जन्म लेते ही राम नाम का उच्चारण किया था इसलिए उनके बचपन का नाम रामबोला पड़ा।
4. तुलसी के माता-पिता का नाम क्या था ?
   तुलसी के माता-पिता का नाम आत्माराम और हुलसी था।
5. तुलसीदास किसके अनन्य भक्त थे ?
   तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे।
6. तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौनसी हैं ?
   तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ - रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, गीथावली, दोहवाली और कवितवाली आदि हैं।
7. तुलसीदस का देहांत कब और कहाँ हुआ ?
   तुलसीदस का देहांत 1623 को काशी में हुआ।
8. मुख्या को किसके समान होना चाहिए ?
   मुख्या को मुख के समान होना चाहिए।
9. तुलसीदास मुख को क्या मानते हैं ?
   तुलसीदास मुख को सम्पूर्ण देह के अंगों का पालन-पोषण करने वाला एक मात्र अंग मानते हैं।

10.मुख किसका पालन पोषण करता है ?

मुख सम्पूर्ण देह का पालन-पोषण करता है।

11.हंस का गुण कैसा होता है ?

हंस का गुण संत के समान होता है।

12.दया किसका मूल है ?

दया धर्म का मूल है।

13.पाप का मूल क्या है ?

अहंकार (अभिमान) पाप का मूल है।

14.जब तक मनुष्य के देह में प्राण है तब तक क्या बनके रहना चाहिए ?

जब तक मनुष्य के देह में प्राण है तब तक दयालु बनके रहना चाहिए।

15.विपत्ति के साथी कौन हैं ?

विपत्ति के साथी हैं - विद्या, विनय, विवेक, साहस, अच्छे कर्म, और हमेशा सत्य बोलने का स्वभाव तथा राम पर भरोसा रखना।

16.हमें किस पर भरोसा रखना चाहिए ?

हमें राम पर भरोसा रखना चाहिए।

17.राम नाम जपने से क्या होता है ?

राम नाम जपने से मनुष्य की आंतरिक और बाह्य शुद्धि होती है।

18.दिये की तुलना किस्से की गई है ?

दिये की तुलना राम नाम के मनी से की गई है।

II . दो तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :-

1. मुखिया को मुख के समान होना चाहिए। कैसे ?

   मुखिया को मुख के समान होना चाहिए। जैसे मुँह खाने-पीने का काम अकेला करके पूरे शरीर का पालन-पोषण करता है वैसे ही मुखिया को भी विवेकवान होना चाहिए कि वह काम अपनी तरह से करे लेकिन उसका फल सभी में बाँटे।

2. मनुष्य को हंस की तरह क्या करना चाहिए ?

   तुलसीदास जी कहते हैं कि, जैसे हंस पक्षी दूध में मिले पानी को त्याग कर केवल दूध ही ग्रहण करता है, वैसे मनुष्य भी विकारों को छोड़ कर अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए। अतः हमें दोष को छोड़कर कर अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए।

3. तुलसीदास के अनुसार मनुष्य के देह में जब तक प्राण है तब तक दया नहीं छोड़ना चाहिए । क्यों ?

   तुलसीदास ने लिखा है कि दया ही अपने आप में सबसे बड़ा धर्म है, जिसका आचरण करने से मनुष्य के आत्मा का विकास होता है। और अहंकार पाप का मूल है। अतः जब तक मनुष्य के शरीर में प्राण हैं, तब तक मनुष्य को अपना अभिमान (अहंकार) छोड़कर दयालु बने रहना चाहिए।

4. विपत्ति में मनुष्य के कौनसे गुण साथ निभाते हैं ?

   तुलसीदास जी ने बताया है कि मनुष्य पर जब संकट आता है तब विद्या, विनय, विवेक, साहस, अच्छे कर्म, और हमेशा सत्या बोलने का स्वभाव ही उसका साथ निभाते हैं। अर्थात उसे अपनी बुद्धि, ज्ञान, और विनम्रता से काम लेना चाहिए और अपने साहस, अच्छे कर्मों, तथा सत्य बोलने के स्वभाव के साथ-साथ राम पर भरोसा रखना चाहिए।

5. मनुष्य के जीवन में प्रकाश कब फैलता है ?

   जिस तरह देहरी पर दिया रखने से घर के भीतर तथा बाहर (आँगन में) प्रकाश फैलता है उसी तरह राम-नाम जपने से मानव की आंतरिक और बाह्य शुद्धि होती है। जिस से मनुष्य जीवन में चारों ओर प्रकाश फैलता है।

III . भावार्थ लिखिए :-

1. " मुखिया मुख सों चाहिए, खान पान को एक ।

   पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक ॥"

संदर्भ :- प्रस्तुत दोहे को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास जी के द्वारा रचित "तुलसी के दोहे " पद्य भाग से लिया गया है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कवि ने यह उल्लेख किया है कि मुखिया में परोपकारी गुण होने चाहिए।

व्याख्या :- प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी मुँह और मुखिया दोनों के स्वभाव की समानता दर्शाते हुए लिखते हैं कि मुखिया को मुख के समान होना चाहिए। जैसे मुँह खाने-पीने का काम अकेला करके पूरे शरीर का पालन पोषण करता है वैसे ही मुखिया को भी विवेकवान होना चाहिए कि वह काम अपनी तरह से करे लेकिन उसका फल सभी में बाँटे।

जीवन मूल्य :- हमें अपने विवेक से और निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

2. " जड़ चेतन, गुण-दोषमय, विस्व कीन्ह करतार।

संत-हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार॥"

संदर्भ :- प्रस्तुत दोहे को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास जी के द्वारा रचित "तुलसी के दोहे " पद्य भाग से लिया गया है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कवि ने साधू और संत लोगों के स्वभाव का उल्लेख किया है।

व्याख्या :- प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी हंस पक्षी के साथ संत की तुलना करते हुए उसके स्वभाव का परिचय देते हैं - सृष्टिकर्ता ने इस इस संसार को जड़ -चेतन और गुण - दोष अर्थात (सार-निसार), समझ -नासमझ सब मिलाकर बनाया है। जैसे कि हंस दूध में मिले पानी को त्याग कर केवल दूध ही ग्रहण करता है; वैसे ही हंस रूपी साधु लोग विकारों को छोड़ कर अच्छे गुणों को अपनाते हैं।

जीवन मूल्य :- हमें विकारों को त्याग कर अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए।

3. "दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।

तुलसी दया न छाँडिये, जब लग घट में प्राण॥"

संदर्भ :- प्रस्तुत दोहे को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास जी के द्वारा रचित "तुलसी के दोहे " पद्य भाग से लिया गया है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कवि ने यह उल्लेख किया है कि मनुष्य को अपना अभिमान छोड़कर दयालु बने रहना चाहिए।

व्याख्या :- प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी ने स्पष्टतः बताया है कि दया धर्म का मूल है और अभिमान पाप का मूल है। इसीलिए जब तक मनुष्य के शरीर में प्राण हैं, तब तक मानव को अपना अभिमान छोड़कर दयालु बने रहना चाहिए।

जीवन मूल्य :- हमें जीवन भर दयावान बनकर रहना चाहिए।

4. “तुलसी साथी विपत्ति के, विद्या विनय विवेक।

साहस सुकृति सुसत्यव्रत, राम भरोसो एक॥ "

संदर्भ :- प्रस्तुत दोहे को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास जी के द्वारा रचित “तुलसी के दोहे“ पद्य भाग से लिया गया है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कवि ने यह उल्लेख किया है कि मनुष्य को कष्ट में विद्या, विनय, विवेक साहस, अच्छे कर्म, और हमेशा सत्या बोलने का स्वभाव ही उसका साथ निभाते हैं।

व्याख्या :- प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी ने बताया है कि मनुष्य पर जब संकट आता है तब विद्या, विनय, विवेक, साहस, अच्छे कर्म, और हमेशा सत्या बोलने का स्वभाव ही उसका साथ निभाते हैं। अर्थात उसे अपनी बुद्धि, ज्ञान, और विनम्रता से काम लेना चाहिए। और मनुष्य को साहसी, सत्यव्रती और अच्छे कर्मों के साथ राम पर भरोसा रखना चाहिए।

जीवन मूल्य :- हमें बुद्धि, ज्ञान, और विनम्रता से संकट का सामना करने के साथ साथ राम पर भरोसा रखना चाहिए।

5. “राम नाम मनी दीप धरु, जीह देहरी द्वार।

तुलसी भीतार बाहिरौ, जो चाहसी उजियार॥"

संदर्भ :- प्रस्तुत दोहे को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास जी के द्वारा रचित “तुलसी के दोहे“ पद्य भाग से लिया गया है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कवि ने यह उल्लेख किया है कि राम-नाम जपने से मानव की आंतरिक और बाह्य शुध्दि होती है।

व्याख्या :- प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी ने स्पष्ट किया है कि जिस तरह देहरी पर दिया रखने से घर के भीतर तथा बाहर (आँगन में) प्रकाश फैलता है उसी तरह राम-नाम जपने से मानव की आंतरिक और बाह्य शुद्धि होती है। जिस से मनुष्य-जीवन में चारों ओर प्रकाश फैलता है।

जीवन मूल्य :- हमें हमेशा भगवान के नाम का जप करते रहना चाहिए।

ASMA ZAUQIA
9901038590

IV . तुकांत शब्द (Rhyming Words) :-

- खान - पान
- एक - विवेक
- करतार - विकार
- परिहारी - वारी
- राम - नाम
- द्वार - उजियार

V . पद्यभाग को पूर्ण कीजिए :-

- मुखिया मुख सों चाहिए, खान-पान को एक।
- पालै पोसै सकाल अंग, तुलसी सहित विवेक।
- राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
- तुलसी भीतर बाहिरौ, जो चाहसी उजियार॥

VI . पर्यायवाची शब्द लिखिए (Synonyms) :-

मुखिया - नेता	पय - दूध
जीह - जीभ	परिहारी - त्यागना
विपत्ति - संकट	दीप - दीपक
विनय - विनम्रता	करतार - सृष्टिकर्ता
उजियार - उजाला	देहरी - दहलीज़

VII . विलोन शब्द लिखिए (Antonyms) :-

विवेक	X	अविवेक	गुण	X	दोष
दया	X	निर्दया	धर्म	X	अधर्म
अभिमान	X	निरभिमान	विकार	X	अविकार
विनय	X	अविनय	विपत्ति	X	संपत्ति
उजियार	X	अंधियार	साहस	X	दुस्साहस
सुकृति	X	दुष्कृति	भीतर	X	बाहर
सत्य	X	असत्य, मिथ्या	जड़	X	चेतन

ASMA ZAUQIA
9901038590

VIII . अनुरूपता (Anology) :-

- धर्म का मूल : दया : : पाप का मूल : अभिमान
- परिहारी : त्यागना : : गहहिं : ग्रहण करना
- जीह : जीभ : : देहरी : दहलीज़
- सुसत्यव्रत : सत्यवान : : करतार : सृष्टिकर्ता
- मुखिया : मुख के समान : : संत : हंस के समान
- विकारों को : त्यागना : : गुणों को : ग्रहण करना

याद रखिए :-

- गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि थे।
- कहा जाता है कि तुलसीदास ने जन्म लेते ही राम नाम का उच्चारण किया था इसलिए उनके बचपन का नाम रामबोला पड़ा।
- तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ - रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, गीथावली, दोहवाली और कवितवाली आदि हैं।
- मुख्या को मुख के समान होना चाहिए।
- मुख सम्पूर्ण देह का पालन-पोषण करता है।
- हंस का गुण संत के समान होता है।
- दया धर्म का मूल है।
- अहंकार (अभिमान) पाप का मूल है।
- जब तक मनुष्य के देह में प्राण है तब तक दयालु बनके रहना चाहिए।
- विपत्ति के साथी हैं - विद्या, विनय, विवेक, साहस, अच्छे कर्म, और हमेशा सत्य बोलने का स्वभाव तथा राम पर भरोसा रखना।
- राम नाम जपने से मनुष्य की आंतरिक और बाह्य शुद्धि होती है।
- दिये की तुलना राम नाम के मनी से की गई है।

दोहे से आगे :-

- रहीम के दोहे पढ़कर उनमें निहित नीति तत्व की कक्षा में चर्चा कीजिए।
  https://www.reckontalk.com/rahim-das-dohe-hindi-meaning-full/
- बिहारी के दस दोहों का संग्रह कीजिए।
  https://www.achhikhabar.com/2017/05/11/%E0%A4%AC%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%A6%E0%A5%8B%E0%A4%B9%E0%A5%87-bihari-ke-dohe/

ASMA ZAUQIA
9901038590

समय की पहचान

-सियारामशरण गुप्त

उद्योगी को कहाँ नहीं सुसमय मिल जाता,
समय नष्ट कर कहीं सौख्य कोई भी पाता।
आलस ही यह करा रहा है सभी बहाने,
जो करना है, करो अभी, कल हो क्या जाने?
पा सकते फिर नहीं कभी तुम इसको खोके
चाहो तुम क्यों नहीं चक्रवर्ती भी होके।
पा सकता कब कौन द्रव्य है इसकी समता,
फिर भी तुमको नहीं ज़रा है इसकी चिंता॥
समय ईश का दिया हुआ अति अनुपम धन है,
यही समय ही अहो तुम्हारा शुभ जीवन है।
तुच्छ कभी तुम नहीं एक पल को भी जानो,
पल-पल से ही बना हुआ जीवन को मानो॥
करना है जो काम, उसी में चित्त लगा दो,
आत्मा पर विश्वास करो, संदेह भागा दो॥
ऐसा सुसमय भला और कब तुम पाओगे,
खोकर पीछे इसे सर्वथा पछताओगे॥

ASMA ZAUQIA
9901038590

कवि परिचय :-

-सियारामशरण गुप्त

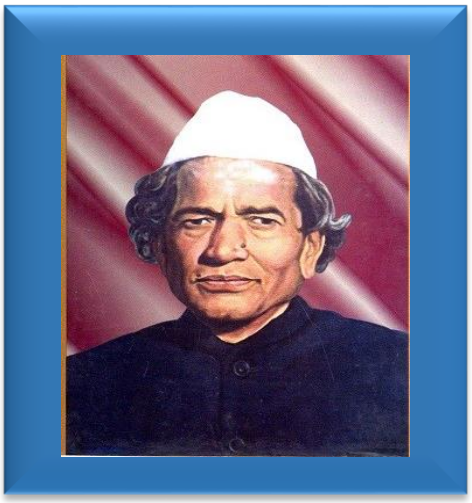

कवि सियारामशरण गुप्त का जन्म 4 सितंबर 1895 को मध्यप्रदेश के झाँसी के चिरगाँव में हुआ था। पिता का नाम सेठ रामचरण कनकने और माता का नाम कौशल्या बाई था। ये हिंदी के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज थे। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद घर पर ही उनहों ने गुजरती, अंग्रेज़ी तथा उर्दू भाषा सीखी। 1929 में महात्मा गांधी जी के संपर्क में आकार वर्धा में रहे।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- मौर्यविजय, अनाथ, विषाद, आर्द्रा, आत्मोत्सर्ग, मृण्मयी, बापू, नकुल आदि। दीर्घकालीन साहित्य सेवा के लिए उन्हें नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा 'सुधार पदक' प्रदान किया गया। लंबे समय की बीमारी के कारण 29 मार्च 1963 में इनका निधन हुआ।

ASMA ZAUQIA
9901038590

कविता का आशय तथा भावार्थ

कवि सियारामशरण गुप्त जी इस कविता में यह संदेश देना चाहते हैं कि, - 'समय' अधिक महत्वपूर्ण तथा उपयोगी होता है। समय को जो अपना सच्चा साथी बना लेगा, वह अपने काम में सफल होगा। इसीलिए हमें काम करने का जो अवसर प्राप्त होता है, उसे व्यर्थ जाने नहीं देना चाहिए। समय बहुत अनमोल है। उसका महत्व धन से भी ज़्यादा है। हमें इसकी महत्ता को समझना चाहिए।

उद्योगी को अर्थात परिश्रम करने वाले व्यक्तियों को हर पल, हर समय, हर परिस्थिति में भी परिश्रम करने के लिए अच्छा समय मिल जाता है। और समय नष्ट करने से किसी को भी सुख प्राप्त नहीं होता। समय नष्ट करनेवाला व्यक्ति परिश्रम नहीं कर पता। और बिना परिश्रम के अच्छे परिणाम मिलने का सुख कैसे प्रप्त होगा।

हम आलस्य के कारण अलग-अलग बहाने बनाकर परिश्रम को टालते रहते हैं। मेहनत करने से चुराते रहते हैं। कवि कहते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है, किसी को नहीं पता। इसलिए हमें हमारे काम को कल पर टालना नहीं चाहिए। जो भी करना है हमें वर्तमान में, इसी क्षण ही करना चाहिए।

कवि समय को अनमोल बताते हुए कहते हैं कि, यह जो समय नाम का धन आज तुम्हारे पास है यदि तुमने इसे व्यर्थ में खो दिया, तो फिर इसे दोबारा पाना असंभव है। चाहे तुम एक सम्राट के जितने सामर्थ्यवान ही क्यों ना हो। समय किसिके लिए नहीं रुकता।

इस संसार की हर बहुमूल्य वस्तु समय के सामने तुच्छ है। कवी कहते हैं कि समय कि समानता इस संसार की कोई वस्तु, कोई भी धन, नहीं कर सकता। कवि चिंतित होकर कह रहे हैं कि, समय को इतना बहू-मूल्य जानने के बाद भी तुम्हें इसे खोने की ज़रा भी दुख या तकलीफ़ क्यों नहीं होती।

कवि कहते हैं कि यह समय तुम्हें ईश्वर के द्वारा दिया गया अनमोल उपहार है। समय का हर एक क्षण शुभ होता है, इसलिए अपने वर्तमान समय को पूरी तरह से जी लो। अगर आज समय का महत्व समझ गए तो यही समय तुमहारे शुभ जीवन का आधार होगा।

हर पल महत्वपूर्ण है किसी पल को तुच्छ या छोटा ना समझो। यह पूरा जीवन एक-एक पल से ही बना हुआ है। इसलिए यदि तुमने हर एक पल का पूर्ण सदुपयोग किया तो तुम्हारा जीवन सफल होगा।

कवि कहते हैं कि तुम्हें जो भी काम करना है उसे ध्यान से, पूरे आत्मविश्वास के साथ करो। और अपने मन में शंका या किसी भी प्रकार का संदेह है तो उसे दूर करो। और अपने आप पर भरोसा रखो।

कवि हमें सतर्क करते हुए कहते हैं कि, तुम्हें ऐसा सुसमय और भला कब मिलेगा यदि तुमने इस बहुमूल्य समय को भविष्य के इंतजार में गँवा दिया, तो तुम्हें पश्चाताप के सिवा कुछ हाथ नहीं आएगा। इसे खोकर इसके पीछे तुम पछताने के सिवा कुछ नहीं कर पाओगे।

शब्दार्थ :-

उद्योगी - परिश्रमी, मेहनती ಉದ್ಯಮಿ, ಪರಿಶ್ರಮಿ	सौख्य - सुख ಸುಖ
नष्ट - नाश, अस्तित्व ना रेहना ನಾಶ, ನಷ್ಟ	आलस - आलस्य, कामचोरी ಆಲಸ್ಯ
बहाना - बात टालना, नाम मात्र का कारण ನೆಪ	द्रव्य - धन, पदार्थ, सामग्री ವಸ್ತು
समता - समान ಸಮಾನತೆ	चिंता - फ़िकर ಚಿಂತೆ
ज़रा - थोड़ा ಸ್ವಲ್ಪ	अनुपम - अनोखा, बेजोड़, उपमाविहीन ಅನುಪಮ, ವಿಶಿಷ್ಟ
अहो - विस्म, आश्चर्य, प्रशंसा सूचित करनेवाला शब्द ವಿಸ್ಮಯ, ಆಶ್ಚರ್ಯ ಸೂಚಿಸುವ ಪದ	तुच्छ - छोटा, क्षुद्र, अल्प, निस्सार ಅತ್ಯಲ್ಪ
पल - क्षण ಕ್ಷಣ	चित्त - मन, ध्यान, अंतःकरण ಧ್ಯಾನ
विश्वास - भरोसा, यकीन ವಿಶ್ವಾಸ, ನಂಬಿಕೆ	सुसमय - अच्छा समय, उत्तम अवसर ಒಳ್ಳೆಯ ಸಮಯ, ಉತ್ತಮ ಸಮಯ
चक्रवर्ती - सम्राट, सार्वभौम, राजा ಚಕ್ರವರ್ತಿ, ರಾಜ	खोना - गँवाना ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವುದು
सर्वथा - सदा, हमेशा ಒಟ್ಟಾರೆಯಾಗಿ, ಯಾವಾಗಲೂ	संदेह - शंका ಸಂದೇಹ, ಸಂಶಯ

विलोम शब्द (Antonyms):-

उद्योगी X निरुद्योगी	शुभ X अशुभ	जीवन X मरण
नष्ट X लाभ	तुच्छ X महान	खोना X पाना
सुख X दुःख	विश्वास X अविश्वास	चिंता X निश्चिंता
आलस्य X परिश्रम	संदेह X निःसंदेह	भला X बुरा

ASMA ZAUQIA
9901038590

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. 'समय की पहचान' कविता के कवि कौन हैं?
   'समय की पहचान' कविता के कवि सियारामशारण गुप्त हैं।
2. किसे हर कठिन परिस्थिति में भी सुसमय मिलजाता है?
   परिश्रम करनेवाले को हर कठिन परिस्थिति में भी सुसमय मिलजाता है।
3. गुप्त जी के अनुसार कब मनुष्य को सुख प्राप्त नहीं होता?
   गुप्त जी के अनुसार समय नष्ट करने से मनुष्य को सुख प्राप्त नहीं होता।
4. बहाने बनाने का प्रमुख कारण क्या है?
   बहाने बनाने का प्रमुख कारण आलस्य है।
5. किसे चक्रवर्ती भी वापस नहीं पा सकता?
   खोये हुए समय को चक्रवर्ती भी वापस नहीं पा सकता।
6. द्रव्य किसकी समानता नहीं कर सकता?
   द्रव्य समय की समानता नहीं कर सकता।
7. मनुष्य को किस बात की चिंता नहीं?
   मनुष्य को इस बात की चिंता नहीं कि समय अनमोल है इसकी समानता कोई भी धन-दौलत नहीं कर सकती और खोया हुआ समय वापस नहीं पा सकते।
8. समय किसका दिया हुआ अनुपम धन है?
   समय ईश्वर का दिया हुआ अनुपम धन है।
9. जीवन किस से बना हुआ है?
   जीवन पल-पल से बना हुआ है।
10. कवि किस पर विश्वास करने को कहते हैं?
    कवि आत्मा पर विश्वास करने को कहते हैं।
11. समय को खोने से क्या होता है?
    समय को खोने से पच्छतावा होता है।
12. हमें कामको कैसे करने चाहिए?
    हमें पूरा ध्यान और मन लगाकर काम करने चाहिए।

II.दो तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए।

1. मनुष्य के लिए सुख की प्राप्ति कब संभव है?
   'समय' अधिक महत्वपूर्ण तथा उपयोगी होता है। समय को जो अपना सच्चा साथी बना लेगा, वह अपने काम में सफल होगा; और मनुष्य के लिए सुख की प्राप्ति संभव होगी। इसीलिए हमें काम करने का जो अवसर प्राप्त होता है, उसे व्यर्थ जाने नहीं देना चाहिए।

2. मानव जीवन में समय का क्या महत्व है?

समय बहुत अनमोल है। उसका महत्व धन से भी ज़्यादा है। समय ईश्वर का दिया हुआ अनुपम धन है। समय नष्ट करने से मनुष्य को सुख प्राप्त नहीं होता।इसीलिए हमें इसकी महत्ता को समझना चाहिए।

3. समय का सदुपयोग कैसे करना चाहिए?

काम को पूरे मन और ध्यान से, पूरे आत्मविश्वास के साथ करके। और अपने मन की शंका या किसी भी प्रकार के संदेह को दूर करके। समय को व्यर्थ में न खोकर हर परिस्थिति में श्रम करके समय का सदुपयोग करना चाहिए।

4. खोया हुआ समय चक्रवर्ती को भी प्राप्त नहीं होता। कैसे?

समय बहुत अनमोल है। उसका महत्व धन से भी ज़्यादा है। समय ईश्वर का दिया हुआ अनुपम धन है। परंतु एक बार इसे खोदिए तो दुबारा कभी भी वापस नहीं पा सकते; चाहे चक्रवर्ती के जैसे सामर्थ्यवान ही क्यों न हो। गुज़रा समय वापस नहीं आएगा।

5. कविता के अंतिम चार पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहते हैं?

कविता के अंतिम चार पंक्तियों में कवि यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य को जो भी काम करना है उसे ध्यान से, पूरे आत्मविश्वास के साथ करना चाहिए।और अपने मन में शंका या किसी भी प्रकार का संदेह है तो उसे दूर करना चाहिए। ऐसा सुसमय और भला कब मिलेगा यदि हमने इस बहुमूल्य समय को भविष्य के इंतजार में गँवा दिया, तो हमें पश्चाताप के सिवा कुछ हाथ नहीं आएगा। इसे खोकर इसके पीछे पछताना पड़ेगा।

6. गुप्त जी समय की पहचान कविता द्वारा क्या संदेश देना चाहते हैं?
(समय की पहचान कविता का आशय क्या है?)

कवि सियारामशरण गुप्त जी इस कविता में यह संदेश देना चाहते हैं कि, - 'समय' अधिक महत्वपूर्ण तथा उपयोगी होता है। समय को जो अपना सच्चा साथी बना लेगा, वह अपने काम में सफल होगा। इसीलिए हमें काम करने का जो अवसर प्राप्त होता है, उसे व्यर्थ जाने नहीं देना चाहिए। समय बहुत अनमोल है। उसका महत्व धन से भी ज़्यादा है। हमें इसकी महत्ता को समझना चाहिए।

7. 'उद्योगी को कहाँ नहीं सुसमय मिल जाता' इस पंक्ति में कवि क्या कहना चाहते हैं?

उद्योगी को अर्थात परिश्रम करने वाले व्यक्तियों को हर पल, हर समय, हर परिस्थिति में भी परिश्रम करने के लिए अच्छा समय मिल जाता है। और समय नष्ट करने से किसी को भी सुख प्राप्त नहीं होता। समय नष्ट करनेवाला व्यक्ति परिश्रम नहीं कर पता। और बिना परिश्रम के अच्छे परिणाम मिलने का सुख कैसे प्रप्त होगा।

8. हमें एक पल को भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए। क्यों?

   हमें एक पल को भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए; क्यों कि हर पल महत्वपूर्ण है किसी पल को तुच्छ या छोटा ना समझो। यह पूरा जीवन एक-एक पल से ही बना हुआ है। इसलिए यदि हमने हर एक पल का पूर्ण सदुपयोग किया तो हमारा जीवन सफल होगा।

III.निम्नलिखित शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(सर्वथा, चक्रवर्ती, करो अभी, शुभ)

1. जो करना है, करो अभी कल हो क्या जाने?
2. चाहो तुम क्यों नहीं चक्रवर्ती भी होके।
3. यही समय ही अहो तुम्हारा शुभ जीवन है।
4. खोकर पीछे इसे सर्वथा पच्छताओगे।

IV.अनुरूपता (Anology):-

1. आलस : परिश्रम : : नष्ट : लाभ
2. जानो : मानो : : लगादो : भागादो
3. धन : निर्धन : : दया : निर्दया
4. जीवन : मरण : : खोना : पाना
5. उद्योगी : सुसमय : : आलस : बहाना
6. आत्मा पर : विश्वास करो : : संदेह : भागादो

V.उदाहरण के अनुसार तुकान शब्दों को पहचान कर लिखिए।

1. जाता - पाता	2. बहाने - जाने
3. समता - चिंता	4. धन - जीवन
5. लगा दो - भागा दो	6. जानो - मानो
7. पाओगे - पछताओगे	

VI. नीचे दिए गए शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए।

1. चकरवरती - चक्रवर्ती
2. चींता - चिंता
3. नश्ट - नष्ट
4. अलास - आलस
5. सरवथा - सर्वथा
6. सयम - समय

ASMA ZAUQIA
9901038590

VII. उदाहरण के अनुसार शब्द लिखिए।

1. समय - सुसमय
2. पुत्र - सुपुत्र
3. फल - सफल
4. मन - सुमन
5. योग्य - सुयोग्य
6. यश - सुयश
7. नाद - सुनाद
8. मति - सुमति

VIII. समय के महत्व से संबंधित निम्नलिखित दो और कविताओं को पढ़िए और लिखिए कक्षा में चर्चा कीजिए।

1. काल करै सो आज कर, आज करै सो अब,
   पल में परलय होवेगा, बहुरि करेगा कब।
2. उठ जाग मुसाफ़िर भोर भाई,
   अब रैन कहाँ जो सोवत है।
   जो सोवत है सो सोवत है,
   जो जागत है सो पावत है।
3. जो आज करना सो अब कर ले।
4. जब चुड़िया चुग गई खेत,
   तब पछताये क्या होता है।

IX. अपने अध्यापक की सहायता से इसे पूर्ण कीजिए:-

एक पहर = 3 घंटे (एक दिन के 8 पहर होते हैं {दिन के - पूर्वान्ह, मध्यान्ह, अपरान्ह, सायंकाल,}

{रात के - प्रदोश, निशिथ, त्रियमा, उषा})

एक दिन = 24 घंटे एक सप्ताह = 7 दिन

एक पक्ष = 15 दिन एक मास = 30 दिन

एक साल = 365 दिन

ASMA ZAUQIA
9901038590

X. तालिका में महीना का नाम लिखिए और 30 दिन आने वाले महीनों में हरा रंग 31 आने वाले महीनों में पीला रंग 28 या 29 आने वाले महीनों में लाल रंग भरिए:-

जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
मई	जून	जुलाई	अगस्त
सितंबर	ऑक्टोबर	नवंबर	दिसंबर

XI. कविता से आगे :-

'समय का महत्व' विषय पर 10 वाक्यों में एक निबंध लिखिए:-

समय का महत्व

विषय प्रवेश :- मानव जीवन में समय का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। समय सभी वस्तुओं से यहाँ तक कि धन से भी अधिक शक्तिशाली तथा अमूल्य वस्तु है। यदि एक बार यह हमारे हाथ से निकल गया तो फिर वापस लौट कर नहीं आता।

समय अनमोल है :- समय धन से भी ज्यादा कीमती है क्यों कि यदि धन को खर्च कर दिया जाए तो यह वापस प्राप्त किया जा सकता है। परंतु यदि हम समय को गवा देते हैं तो उसे वापस प्राप्त नहीं कर सकते। समय के बारे में यह सामान्य कहावत है कि समय और ज्वार - भाटा कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हैं। यह बिल्कुल पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व की तरह ही सत्य है, अर्थात जिस तरह से पृथ्वी पर जीवन का होना सत्य है, ठीक उसी तरह से यह कहावत भी बिल्कुल सत्य है। समय बिना किसी रूकावट के निरंतर चलता रहता है यह कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। चाहे मनुष्य चक्रवर्ती के जितना सामर्थ्यवान ही क्यों न हो। इसीलिए, हमें जीवन के किसी भी दौर में कभी भी अपने कीमती समय को बिना किसी उद्देश्य और अर्थ के व्यर्थ नहीं करना चाहिए।

उपसंहार :- हमें हमेशा समय के महत्व को समझना चाहिए और उसी के अनुसार उसे सकारात्मक ढंग से कुछ उद्देश्यों की पूर्ति केलिए इसका प्रयोग करना चाहिए। हमें हर क्षण समय से नियमितता, निरंतरता, और प्रतिबद्धता सीखनी चाहिए। जीवन में हमें वास्तविक सफलता प्राप्त करने के लिए समय के साथ साथ कदम से कदम मिलकर चलने की कोशिश करनी चाहिए।

ASMA ZAUQIA
9901038590

सूर-श्याम

-सूरदास

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिजयो।

मोसों कहत मोल को लीनो, तोहि जसुमति कब जायो॥

कहा कहौं इहि रिस के मारे, खेलन हौं नहिं जात।
पुनि पुनि कहत कौन है माता, को है तुमरो तात॥

गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल, सब सिखै देत बलबीर॥

तू मोहिं को मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीजै।
मोहन को मुख रिस समेत लखि, जसुमति सुनि सुनि रीझै॥

सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत।

'सूर' स्याम मोहिं गोधन की सौं, हौं माता तू पूत॥

ASMA ZAUQIA
9901038590

कवि परिचय :-

- सूरदास

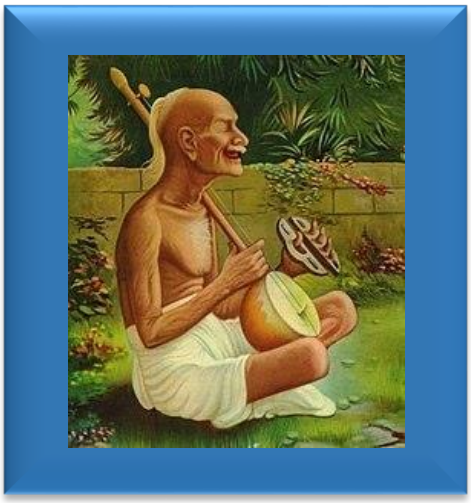

महाभक्त कवि सूरदास हिंदी साहित्याकाश के सूर्य माने जाते हैं। कहा जाता है कि सूर, सूर्य के समान, तो तुलसी ससी अर्थात शशि (चंद्र) के समान हैं। इन्हें भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा की कृष्णभकती-शाखा के प्रवर्तक माना जाता है। कहा जाता है कि, इनका जन्म उत्तर प्रदेश के रुनकता गाँव में सन् 1540 को हुआ था। कहा जाता है कि, सूरदास जन्म से ही अंधे थे।

महाकवि सूरदास बाल मनोविज्ञान के महान पंडित थे। बाल मनोविज्ञान के अद्भुत ज्ञान ने वात्सल्य रस के वर्णन में इनकी बहुत सहायता की है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - 'सूर-सागर', 'सूर-सारावलि' एवं 'साहित्य-लहरी'। इनके काव्यों में वात्सल्य, शृंगार, तथा भक्ति का त्रिवेणी संगम हुआ है। इनकी ब्रज भाषा मानी जाती है।

इनकी मृत्यु सन् 1642 को हुई।

ASMA ZAUQIA
9901038590

पद का आशय तथा भावार्थ

प्रस्तुत पद में कवि सूरदास ने कृष्ण की बाल-लीला का वर्णन करते हुए, उनके स्वभाव, भोलेपन, एवं माता यशोदा के वात्सल्य का सुंदर चित्रण किया है। प्रस्तुत पद में सूरदास ने बालकृष्ण के भोलेपन और यशोधा के वात्सल्य का मार्मिक चित्रण किया है।

बच्चे स्वभाव से भोले होते हैं। वे हमेशा अपने माता-पिता से अपने भाई, बहन और मित्रों की कुछ-न-कुछ शिकायत करते रहते हैं। उनका बाल सहज स्वभाव देखकर बड़ों को हँसी आती है और उन्हें पुचकारकर सांत्वना देते हैं। माँ और बेटे के ऐसे सहज संबंध की कल्पना कर सूरदास जी ने अपने इस पद में उसका मार्मिक चित्रण किया है।और साथ-साथ ममता और वात्सल्य रस से अवगत किया है।

प्रस्तुत पद में सूरदास जी ने माता यशोदा से कृष्ण द्वारा, बड़े भाई बलराम की शिकायत का मोहक वर्णन किया गया है। बालकृष्ण यशोदा माता से शिकायत करता है कि, हे ! मैया मुझे भैया बहुत चढ़ाता है। और मुझसे कहता है कि, मुझे तुम खरीद कर लाई हो, मुझे तुमने जन्म नहीं दिया है। मुझसे पूछते हैं कि तुझे यशोदा मैया ने कब जन्म दिया?

क्या करूँ इसी क्रोध के कारण मैं खेलने नहीं जाता। बार-बार मुझसे पूछता है, कि तुम्हारी माँ और तुम्हारे पिता कौन हैं? नंद और यशोदा गोरे हैं; परंतु तुम क्यों साँवले शरीर वाले हो? कहकर चिढ़ाता है। उसकी यह हँसी- मज़ाक देख कर अन्य ग्वाल मित्र चुटकी बजा-बजाकर हँसते और चिढ़ाते रहते हैं। बलराम ने ही सभी मित्रों को ऐसा सिखाया है।

अपने भाई के प्रति क्रोधित और सखाओं द्वारा अपमानित बालकृष्ण भोलेपन से शिकायत करते हुए यशोदा से कहते हैं कि, मैया तूने केवल मुझे ही मारना सीखा है। तूने अब तक बलराम पर कभी भी गुस्सा नहीं किया है। कृष्ण के भोले मुख से यह शिकायत सुन-सुनकर बालकृष्ण के अबोध चेहरे को देख कर यशोदा कृष्ण पर लाड़ प्यार से मोहित होती है।

और कृष्ण को पुचकारकर सांत्वना देते हुए माता यशोदा कहती है कि, सुनो कान्हा बलराम जन्म से ही पीठ पीछे बुराई करनेवाला चुगलखोर और दुष्ट है। मेरे सूर्य-मुख कान्हा मुझे गाय रूपी धन की सौगंध मैं ही तुम्हारी माता हूँ और तुम मेरे ही पुत्र हो।

पद की अंतिम पंक्ति में सूरदास अपने नाम को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किए हैं, सूर अर्थात सूर्य इस पंक्ति में एक तरफ़, माता यशोदा अपने पुत्र को वात्सल्य भाव से सूर्य-मुखी कह रही है। तो दूसरी तरफ़ सूरदास, कृष्ण को भक्ति भाव से सूरदास के कृष्ण बता रहे हैं।

अस्मा ज़ौकिया हिंदी भाषा अध्यापिका GHS कृष्णापुरा - के. आर. पेट तहसील, मंड्या ज़िला

ASMA ZAUQIA
9901038590

शब्दार्थ :-

मैया - माँ, माता ಅಮ್ಮ, ತಾಯಿ	चुटकी दै-दै - अँगूठे को छटकाकर ध्वनि निकालना, चुटकी दे-देकर ಚುಟಕಿ ಹೊಡೆಯುವುದು
मोहिं - मुझे ನನಗೆ	हँसत - हस्ते हैं, उपहास करते हैं ನಗುತ್ತಾರೆ
दाऊ - बड़ा भाई, भैया ಅಣ್ಣ	ग्वाल - गाय चरनेवाले ಗ್ವಲ್ಲ
खीजायो - चिढ़ा रहा है ಕೀಟಲೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾನೆ	सिखै देत - सिखाना, सिखा दिया ಕಲಿಸಿ
मोसों - मुझको ನನಗೆ	बलबीर, बलभद्र - बलराम ಬಲರಾಮ
कहत - कहता है ಹೇಳುತ್ತಾನೆ	मारन - मारना ಹೊಡೆಯುವುದು
मोल - मूल्य, दाम ಬೆಲೆ	दाउहि - भाई को ಅಣ್ಣನನ್ನು
लीनो - ख़रीदना, मोलना ಖರೀದಿ, ಕೊಳ್ಳಲಾಗಿದೆ	कबहूँ - कभी भी ಎಂದಿಗೂ
तोहि - तुझे ನಿನಗೆ	खीझै - गुस्सा ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ
जसुमति - जसोदा, यशोदा-मता ಯಶೋಧ ಮಾತೆ	मुख-रिस - क्रोधित-मुख ಕೋಪದ ಮುಖ
जायो - जन्म दिया, जना ಜನ್ಮ	समेत - सहित ಸಹಿತ
कहा कहौं - क्या करूँ ಏನು ಮಾಡಲಿ	लखि - देखकर ನೋಡಿ
इहि - इसी ಅದೇ	सुनि-सुनि - सुन-सुनकर ಕೇಳಿ-ಕೇಳಿ
रिस - क्रोध ಕ್ರೋಧ, ಕೋಪ	रीझै - मोहित होना ಆಕರ್ಷಿತರಾಗುವುದು

ASMA ZAUQIA
9901038590

के मारे - के कारण ಈ ಕಾರಣ	सुनहु - सुनो ಕೇಳು
खेलन - खेलने ಆಡಲು	कान्हा - कृष्ण ಕೃಷ್ಣ
हौं - मैं ನಾನು	चबाई - चुगलखोर, पीठ पीछे बुराई करनेवाला ಚಾಡಿ ಹೇಳುವವನು
नहिं जात - नहीं जाता ಹೋಗುವುದಿಲ್ಲ	जनमत ही को - जन्म से ही ಜನ್ಮದಿಂದ
पुनि-पुनि - बार-बार ಮತ್ತೆ-ಮತ್ತೆ, ಪದೇ-ಪದೇ	धूत - दुष्ट ದುಷ್ಟ
को - कौन ಯಾರು	सूर - सूर्य ಸೂರ್ಯ
तुमरो - तुम्हारे ನಿನ್ನ	स्याम - काला, साँवला, श्याम ಕಪ್ಪು
तात - पिता ತಂದೆ	गोधन - पशुधन, संपत्ति रूपी गाय ಸಂಪತ್ತು ರೂಪಿ ಹಸು
कत - क्यों ಏಕೆ	सौं - सौगंध, शपथ ಪ್ರಮಾಣ
स्याम - साँवला, श्याम, काला ಕಪ್ಪು	पूत - पुत्र ಪುತ್ರ
सरीर - शरीर ಶರೀರ	

ASMA ZAUQIA
9901038590

I . एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

1. सूरदास का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
   सूरदास का जन्म सन् 1540 में उत्तर-प्रदेश के रुनकता गाँव में हुआ था।
2. सूरदास की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?
   सूरदास की प्रमुख रचनाएँ सूर-सागर, सूर-सरावली, एवं साहित्य लहरी हैं।
3. सूरदास के काव्य में किस का संगम हुआ है?
   सूरदास के काव्य में वात्सल्य, शृंगार, तथा भक्ति का त्रिवेणी संगम हुआ है।
4. 'सूर-श्याम पद के रचयिता कौन हैं?
   'सूर-श्याम पद के रचयिता सूरदास हैं।
5. बालकृष्ण किससे शिकायत करता है?
   बालकृष्ण यशोदा मैया से शिकायत करता है।
6. कृष्ण की शिकायत किसके प्रति है?
   कृष्ण की शिकायत बलराम के प्रति है।
7. बलराम के अनुसार किसे मोल लिया गया है?
   बलराम के अनुसार कृष्ण को मोल लिया गया है।
8. बलराम कृष्ण के प्रति क्या कहता है?
   बलराम कृष्ण के प्रति कहता है कि यशोदा मैया ने तुम्हें जन्म नहीं दिया।
9. कृष्ण बलराम के साथ खेलने क्यों नहीं जाना चाहता?
   कृष्ण बलराम के साथ खेलने नहीं जाना चाहता क्यों कि बलराम उसे चिढ़ाता है।
10. बलराम कृष्ण को बार-बार क्या पूछकर चिढ़ाता है?
    बलराम कृष्ण को बार-बार तुम्हारे माता-पिता कौन हैं यह पूछकर चिढ़ाता है।
11. बलराम कृष्ण के माता-पिता के बारे में क्या कहता है?
    बलराम कृष्ण से माता-पिता के बारे में यह कहता है कि नंद और यशोदा गोरे हैं।
12. यशोदा और नंद का रंग कैसा था?
    यशोदा और नंद का रंग गोरा था।
13. बालकृष्ण का रंग कैसा था?
    बालकृष्ण का रंग काला था।
14. चुटकी दे-देकर कौन हँसते और चिढ़ा रहे थे?
    चुटकी दे-देकर ग्वाल-मित्र हँसते और चिढ़ा रहे थे।
15. कृष्ण का दाऊ कौन था?
    कृष्ण का दाऊ बलराम था।

16.ग्वाल-मित्र कृष्ण को किसके कहने पर चिढ़ा रहे थे?

ग्वाल-मित्र कृष्ण को बलराम के कहने पर चिढ़ा रहे थे।

17.कृष्ण के अनुसार यशोदा किसे मारती है और किस पर कभी भी क्रोध नहीं करती?

कृष्ण के अनुसार यशोदा कृष्ण को मारती है, और बलराम पर कभी भी क्रोध नहीं करती है।

18.यशोदा क्या देखकर मोहित होती है?

यशोदा बलकृष्ण के भोले क्रोधित मुख को देखकर मोहित होती है।

19.यशोदा के अनुसार कौन जन्म से ही दुष्ट है?

यशोदा के अनुसार बलराम जन्म से ही दुष्ट है।

20.यशोदा किसकी कसम खाती है?

यशोदा गोधन की कसम खाती है।

II . दो तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :-

1. बाल कृष्णा अपनी माता से क्या-क्या शिकायतें करता है?

बाल कृष्णा अपनी माता से शिकायतें करता है कि, हे! मैया मुझे भैया बहुत चढ़ाता है। और मुझसे कहता है कि, मुझे तुम खरीद कर लाई हो, मुझे तुमने जन्म नहीं दिया है। बार-बार मुझसे पूछता है, कि तुम्हारी माँ और तुम्हारे पिता कौन हैं? नंद और यशोदा गोरे हैं; परंतु तुम क्यों साँवले शरीर वाले हो? कहकर चिढ़ाता है। उसकी यह हँसी- मज़ाक देख कर अन्य ग्वाल मित्र चुटकी बजा-बजाकर हँसते और चिढ़ाते रहते हैं। बलराम ने ही सभी मित्रों को ऐसा सिखाया है।

2. यशोदा कृष्ण के क्रोध को कैसे शांत करती है?

कृष्ण को पुचकारकर सांत्वना देते हुए माता यशोदा कहती है कि, सुनो कान्हा बलराम जन्म से ही पीठ पीछे बुराई करनेवाला चुगलखोर और दुष्ट है। मेरे सूर्य-मुख कान्हा मुझे गाय रूपी धन की सौगंध मैं ही तुम्हारी माता हूँ और तुम मेरे ही पुत्र हो। यह कहकर यशोदा कृष्ण के क्रोध को शांत करती है।

3. बलराम कृष्ण को क्या-क्या कहकर चिढ़ाता है?

बलराम कृष्ण को यह कहकर चिढ़ाता है कि, कृष्ण को यशोधा मैया खरीद कर लाई है। बलराम बार-बार कृष्ण से पूछता है, कि तुम्हारी माँ और तुम्हारे पिता कौन हैं? नंद और यशोदा गोरे हैं; परंतु तुम क्यों साँवले शरीर वाले हो? कहकर चिढ़ाता है। उसकी यह हँसी- मज़ाक देख कर अन्य ग्वाल मित्र चुटकी बजा-बजाकर हँसते और चिढ़ाते रहते हैं।

4. कृष्ण अपनी मता यशोदा के प्रति क्यों नाराज़ है?

कृष्ण अपनी मता यशोदा के प्रति इसलिए नाराज़ है क्यों कि, कृष्ण के अनुसार यशोधा मैया ने केवल कृष्ण को ही मारना सीखा है। और अब तक बलराम पर कभी भी गुस्सा नहीं किया है।

ASMA ZAUQIA
9901038590

III . भावार्थ लिखिए :-

पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए:-

प्रस्तुत पद में सूरदास जी ने माता यशोदा से कृष्ण द्वारा, बड़े भाई बलराम की शिकायत का मोहक वर्णन किया गया है। बालकृष्ण यशोदा माता से शिकायत करता है कि, हे ! मैया मुझे भैया बहुत चढ़ाता है। और मुझसे कहता है कि, मुझे तुम खरीद कर लाई हो, मुझे तुमने जन्म नहीं दिया है। मुझसे पूछते हैं कि तुझे यशोदा मैया ने कब जन्म दिया? इसी क्रोध के कारण मैं खेलने नहीं जाता। बार-बार मुझसे पूछता है, कि तुम्हारी माँ और तुम्हारे पिता कौन हैं? नंद और यशोदा गोरे हैं; परंतु तुम क्यों साँवले शरीर वाले हो? कहकर चिढ़ाता है। उसकी यह हँसी- मज़ाक देख कर अन्य ग्वाल मित्र चुटकी बजा-बजाकर हँसते और चिढ़ाते रहते हैं। बलराम ने ही सभी मित्रों को ऐसा सिखाया है। अपने भाई के प्रति क्रोधित और सखाओं द्वारा अपमानित बालकृष्ण भोलेपन से शिकायत करते हुए यशोदा से कहते हैं कि, मैया तूने केवल मुझे ही मारना सीखा है। तूने अब तक बलराम पर कभी भी गुस्सा नहीं किया है। कृष्ण के भोले मुख से यह शिकायत सुन-सुनकर बालकृष्ण के अबोध चेहरे को देख कर यशोदा कृष्ण पर लाड़ प्यार से मोहित होती है। और कृष्ण को पुचकारकर सांत्वना देते हुए माता यशोदा कहती है कि, सुनो कान्हा बलराम जन्म से ही पीठ पीछे बुराई करनेवाला चुगलखोर और दुष्ट है। मेरे सूर्य-मुख कान्हा मुझे गाय रूपी धन की सौगंध मैं ही तुम्हारी माता हूँ और तुम मेरे ही पुत्र हो। पद की अंतिम पंक्ति में सूरदास अपने नाम को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किए हैं, सूर अर्थात सूर्य इस पंक्ति में एक तरफ़, माता यशोदा अपने पुत्र को वात्सल्य भाव से सूर्य-मुखी कह रही है। तो दूसरी तरफ़ सूरदास, कृष्ण को भक्ति भाव से सूरदास के कृष्ण बता रहे हैं।

IV . तुकांत शब्द (Rhyming Words) :-

1. खिजायो - जायो
2. जात - तात
3. सरीर - बलबीर
4. सीखै - रीझै
5. धूत - पूत

V . पद्यभाग को पूर्ण कीजिए :-

1. गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर।
   चुटकी दै दै हँसत ग्वाल, सब सिखै देत बलबीर॥
2. सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत।
   'सूर' स्याम मोहिं गोधन की सौं, हौं माता तू पूत॥

ASMA ZAUQIA
9901038590

VI . अनुरूपता (Anology) :-

बलभद्र : बलराम : : कान्हा : कृष्ण
जसोदा : माता : : नंद : पिता
रीझना : मोहित करना : : खिजाना : चिढ़ाना
बलबीर : बलराम : : जसोदा : यशोदा

तुलसी का जन्म : राजापुर : : सूरदास का जन्म : रुनकता
रामभक्ति शाखा : तुलसीदास : : कृष्णभक्ति शाखा : सूरदास

VII . सही शब्द चुनकर लिखिए :-

(चुगलखोर, गोरी, श्याम, चुटकी, बाल-लीला)

1. जसोदा - गोरी
2. कृष्ण - श्याम
3. ग्वाल मित्र - चुटकी
4. बलराम - चुगलखोर
5. कृष्ण की - बाल लीला

VIII . आधुनिक रूप लिखिए :-

जैसे : मैया - माता

मोहिं - मुझे
मोसों - मुझको
रिस - क्रोध
सरीर - शरीर
सीखै - सीखी हो
जसुमति - यशोमति
धूत - दुष्ट
कान्हा - कृष्ण
पूत - पुत्र
जनमत - जन्म से

याद रखिए :-

- सूरदास का जन्म सन् 1540 में उत्तर-प्रदेश के रुनकता गाँव में हुआ था।
- सूरदास की प्रमुख रचनाएँ सूर-सागर, सूर-सरावली, एवं साहित्य लहरी हैं।
- सूरदास के काव्य में वात्सल्य, शृंगार, तथा भक्ति का त्रिवेणी संगम हुआ है।
- 'सूर-श्याम पद के रचयिता सूरदास हैं।
- बालकृष्ण यशोदा मैया से शिकायत करता है।
- कृष्ण की शिकायत बलराम के प्रति है।
- बलराम के अनुसार कृष्ण को मोल लिया गया है।
- बलराम कृष्ण के प्रति कहता है कि यशोदा मैया ने तुम्हें जन्म नहीं दिया।
- कृष्ण बलराम के साथ खेलने नहीं जाना चाहता क्यों कि बलराम उसे चिढ़ाता है।

- बलराम कृष्ण को बार-बार तुम्हारे माता-पिता कौन हैं यह पूछकर चिढ़ाता है।
- बलराम कृष्ण से माता-पिता के बारे में यह कहता है कि नंद और यशोदा गोरे हैं।
- यशोदा और नंद का रंग गोरा था।
- बालकृष्ण का रंग काला था।
- चुटकी दे-देकर ग्वाल-मित्र हँसते और चिढ़ा रहे थे।
- कृष्ण का दाऊ बलराम था।
- ग्वाल-मित्र कृष्ण को बलराम के कहने पर चिढ़ा रहे थे।
- कृष्ण के अनुसार यशोदा कृष्ण को मारती है, और बलराम पर कभी भी क्रोध नहीं करती है।
- यशोदा बलकृष्ण के भोले क्रोधित मुख को देखकर मोहित होती है।
- यशोदा के अनुसार बलराम जन्म से ही दुष्ट है।
- यशोदा गोधन की कसम खाती है।

कविता से आगे :-

- भक्त कवयित्री मीराबाई का परिचय पाइए और कक्षा में चर्चा कीजिए।
  http://hi.m.wikipedia.org>wiki - मीराबाई
- कन्नड़ के कवि पुरंदरदास और कनकदास की जानकारी प्राप्त कीजिए।
  http://kn.m.wikipedia.org>wiki - पुरंदरदास, कनकदास
- चित्र देखकर यह कहानी रची है और उसके लिए यह उचित शीर्षक दीजिए।
  https://youtu.be/_SrBt7Jv5ql अध्यापकगण छात्रों को इस विडियो को दिखाकर कहानी रचने में सहायता कर सकते हैं।

ASMA ZAUQIA
9901038590

कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती

- सोहनलाल द्विवेदी

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना ना अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो।
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो।
जब तक ना सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

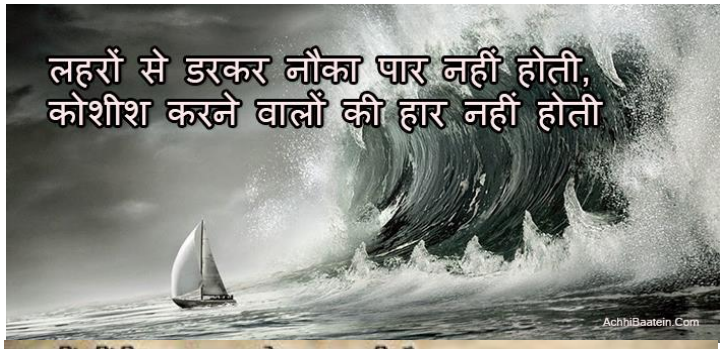

अस्मा ज़ौकिया हिंदी भाषा अध्यापिका GHS कृष्णापुरा - के. आर. पेट तहसील, मंड्या ज़िला

ASMA ZAUQIA
9901038590

कवि परिचय :-

- सोहनलाल द्विवेदी

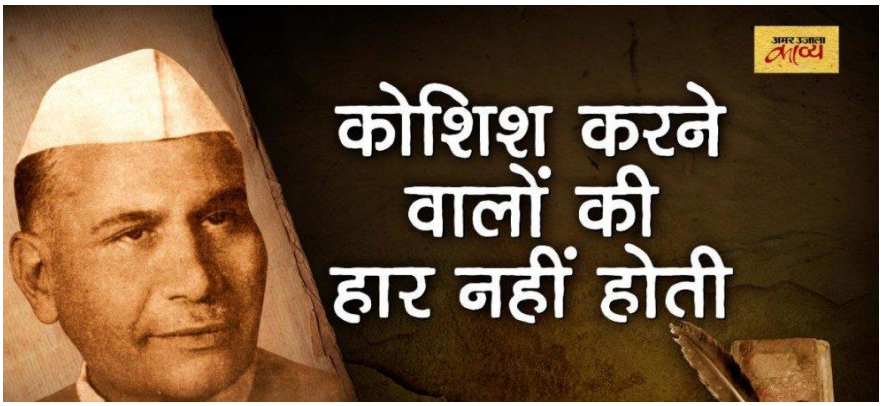

सोहनलाल द्विवेदी जी हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि हैं। आपका जन्म 23 फरवरी सन् 1906 को हुअ। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम. ए., एल.एल.बी., की डिग्री ली और आजीविका केलिए जमींदारी तथा बैंकिंग का काम करते रहे। सन 1938 से सन 1942 तक आप राष्ट्रीय पत्र 'दैनिक अधिकार' के संपादक थे। कुछ वर्षों तक अपने अवैतनिक (बिना वेतन के) बाल पत्रिका 'बाल-सखा' का संपादन भी किया। आप महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति केलिए देशभक्ति व ऊर्जा से ओतप्रोत आपकी रचनाओं की विशेष सराहना हुई। तथा आपको राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत किया गया। सन 1988 में राष्ट्रकवि द्विवेदी जी का देहांत हो गया। आप की प्रमुख कृतियाँ हैं - भैरवी, वासवदत्ता, कुणाल, पूजागीत, विषपान, युगाधार और जय गांधी। बांसुरी, झरना, बिगुल, बच्चों के बापू, दूध बताशा, बाल-भारती, शिशु भारती, नेहरू चाचा, सुजाता, प्रभावती आदि आप का प्रमुख बाल-साहित्य है।

ASMA ZAUQIA
9901038590

कविता का आशय तथा भावार्थ

इस कविता में कोशिश और परिश्रम से सफलता प्राप्त करने का संदेश मिलता है। कवि कहते हैं कि जीवन की प्रतियोगिता में असफलता से विमुख न होते हुए अपनी कमियों को खुद पहचानकर स्वप्रयत्न से लगातार आगे बढ़ने से हार कभी नहीं होती है। इस कविता में कवि ने यह संदेश दिया है कि निरंतर प्रयत्न करने वाले व्यक्ति को एक न एक दिन निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है। समस्याओं से मुँह न मोड़कर आगे बढ़ना चाहिए।

कवि कविता की आरंभिक पंक्तियों में कहते है कि समंदर हो या नदी पार करने केलिए लहरों के तेज़ बहाव से डरकर अगर किनारे पर ही बैठे रहेंगे तो नौका समंदर या नदी को पार नहीं कर सकती; अगर दूसरे किनारे तक पहुँचना है तो भयंकर लहरों का सामना करना ही पढ़ता है, ठीक उसी तरह अपने लक्ष्य को पाने केलिए समस्याओं का डट कर सामना करनेवालों की कभी हार नहीं होती। निरंतर प्रयत्न करने वालों को निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है।

कवि नन्ही चींटी का उदाहरण देकर कहते हैं कि एक नन्ही सी चींटी अपने वज़न से कई गुना ज़्यादा वज़न वाले दाने को लेकर जब दीवारों पर चढ़ती है तो सौ बार फिसलती है; फिर भी बार-बार चढ़ती है, उसके मन का यह विश्वास कि वह ज़रूर सफल होगी उसे साहस प्रदान करता है और उसका बार-बार गिरकर चढ़ना या चढ़कर गिरना उसे बुरा नहीं लगता; अंत में उसकी मेहनत रंग लाती है और वह सफल होती है। उसी तरह मनुष्य को भी कठिन से कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए; क्यों कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

गोताखोर सागर के गहरे पानी में डुबकियाँ लगता है और कई बार खाली हाथ लौट कर आता है उसकी खाली मुट्ठी और मोती पाने की तीव्र इच्छा उसके उत्साह को दुगना करदेती है उसकी मुट्ठी हर बार खाली नहीं होती। उसी तरह मनुष्य को भी एक दो बार सफलता न मिलने पर घबराना नहीं चाहिए किन्तु प्रयत्न करते रहने से एक न एक बार उसे सफलता ज़रूर मिलेगी। क्यों कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

कवि कहते हैं कि असफलता को हमें जीवन में आई एक चुनौती की तरह स्वीकारना चाहिए, असफलता का कारण ढूंढ कर उन कमियों को सुधारकर सही योजना से सफल होने का प्रयत्न करने चाहिए, और जब तक सफलता नहीं मिलती नींद और चैन को त्याग कर संघर्ष करते रहना चाहिए। कभी कठिनायियों से घबरा कर संघर्ष के मैदान को नहीं छोड़ना चाहिए। बिना परिश्रम के किसी की जय-जयकार नहीं होती; और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

अस्मा ज़ौकिया हिंदी भाषा अध्यापिका GHS कृष्णापुरा - के. आर. पेट तहसील, मंड्या ज़िला

ASMA ZAUQIA
9901038590

शब्दार्थ :-

लहर - तरंग, बहाव ಅಲೆ	गोताखोर - तैराक, जलाशय में गोता लगानेवाला व्यक्ति ಈಜುಗಾರ	डुबकी - गोता, आप्लावन, पानी के नीचे पैठ ಅದ್ದು, ಧುಮುಕುವುದು
नौका - नाव ದೋಣಿ	हैरान होना - आश्चर्यचकित होना ಆಶ್ಚರ್ಯವಾಗುವುದು	सहज - एक ही समय उत्पन्न ಸರಳ, ಸ್ವಭಾವಿಕ
कोशिश - प्रयत्न, प्रयास ಪ್ರಯತ್ನ	चुनौती - दावा, ललकार ಸವಾಲು	सफल - विजयी ಯಶಸ್ಸು
हार - पराजय, विफलता ಸೋಲು	कमी - अभाव, न्यूनता ಕೊರತೆ	मैदान - क्षेत्र, भूमि ಮೈದಾನ, ನೆಲ
नन्हीं - छोटी, लघु ಪುಟ್ಟ	चैन - आराम, सुख ಶಾಂತಿ	बिना - अतिरिक्त, बग़ैर, सिवा ಇಲ್ಲದೆ
दाना - धान्य, अनाज, कण ಧಾನ್ಯ	संघर्ष - टकराव ಹೋರಾಟ	जय-जयकार - सामूहिक प्रशंसा ಒಳ್ಳೆಯ ಮೆರಗು
दीवार - भित्ति ಗೋಡೆ	डर - भय ಭಯ	स्वीकार - अंगीकरण, परिग्रह ಸ್ವೀಕರಿಸಿ
विश्वास - भरोसा, यकीन ವಿಶ್ವಾಸ	पार - नदी, समुद्र आदि का दूसरी ओर का किनारा, अलग और दूर ದಡ, ಮೀರಿ	
रग - नस, स्नायु, नाड़ी ರಕ್ತನಾಳಗಳು	फिसलना - रपटना ಜಾರುವುದು	
साहस - धैर्य, हिम्मत, हौसला ಸಾಹಸ, ಧೈರ್ಯ	सिंधु - सागर, समुद्र, अंबुधि ಸಮುದ್ರ	
अखरना - बुरा लगना ಕೆಟ್ಟ ಅನುಭವ	सुधार - परिवर्तन ಪರಿವರ್ತನೆ	
मेहनत - परिश्रम ಪರಿಶ್ರಮ	उत्साह - उमंग, हौसला ಉತ್ಸಾಹ	
बेकार - व्यर्थ, निरर्थक ವ್ಯರ್ಥ	मुट्ठी - मुष्टि, बँधी हुई हथेली ಮುಷ್ಟಿ	

ASMA ZAUQIA
9901038590

I . एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

1. "कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती" कविता के कवि कौन हैं?
   "कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती" कविता के कवि सोहनलाल द्विवेदी जी हैं।
2. कवि सोहनलाल द्विवेदी जी किस पत्र के संपादक थे?
   कवि सोहनलाल द्विवेदी जी 'दैनिक अधिकार' नामक पत्रिका के संपादक थे।
3. कवि सोहनलाल द्विवेदी जी को किस उपाधि से अलंकृत किया गया?
   कवि सोहनलाल द्विवेदी जी को 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से अलंकृत किया गया।
4. किससे डरकर नौका पार नहीं होती?
   लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
5. किन लोगों की कभी हार नहीं होती?
   कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।
3. दाना लेकर कौन चलती है?
   नन्हीं चींटी दाना लेकर चलती है।
4. चींटी कहाँ दाना लेकर चढ़ती है?
   चींटी दाना लेकर दीवारों पर चढ़ती है।
5. रगों में साहस किस से बढ़ता है?
   मन के विश्वास से रगों में साहस बढ़ता है।
6. चींटी को क्या नहीं अखरता?
   चींटी को दीवरों पर चढ़कर गिरना या गिरकर चढ़ना अखरता नहीं है।
7. किसकी मेहनत बेकार नहीं होती?
   चींटी की मेहनत बेकार नहीं होती।
8. सागर में कौन डुबकियाँ लगता है?
   सागर में गोताखोर डुबकियाँ लगता है।
9. गोताखोर कहाँ डुबकियाँ लगाता है?
   गोताखोर सागर में डुबकियाँ लगता है।
10. खाली हाथ कौन लौटकर आता है?
    गोताखोर खाली हाथ लौटकर आता है।
11. हैरानी में क्या बढ़ता है?
    हैरानी में मन का उत्साह बढ़ता है।
12. मोती कहाँ मिलते हैं?
    मोती गहरे पानी में मिलते हैं।

13.किसकी मुट्ठी खाली नहीं होती?

गोताखोर मुट्ठी खाली नहीं होती।

14.असफलता क्या है?

असफलता एक चुनौती है।

15.हमें क्या स्वीकार करना चाहिए?

हमें असफलता को स्वीकार करना चाहिए।

16.सफलता पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

सफलता पाने के लिए हमें असफलता के कारणों को ढूंढकर उन कमियों का सुधार करना चाहिए।

17.सफलता पाने तक हमें क्या त्यागना चाहिए?

सफलता पाने तक हमें नींद और चैन को त्यागना चाहिए।

18.कहाँ से भागना नहीं चाहिए?

संघर्ष के मैदान से भागना नहीं चाहिए।

19.कुछ किए बिना क्या नहीं होती?

कुछ किए बिना जय-जयकार नहीं होती।

II . दो तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :-

1. नन्हीं चींटी के बारे में कवि क्या कहते हैं?

कवि नन्ही चींटी का उदाहरण देकर कहते हैं कि एक नन्ही सी चींटी दाने को लेकर जब दीवारों पर चढ़ती है तो सौ बार फिसलती है; फिर भी बार-बार चढ़ती है, उसके मन का यह विश्वास कि वह ज़रूर सफल होगी उसे साहस प्रदान करता है और उसका बार-बार गिरकर चढ़ना या चढ़कर गिरना उसे बुरा नहीं लगता; अंत में वह सफल होती है। उसी तरह मनुष्य को भी कठिन से कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए।

2. गोताखोर की मेहनत के बारे में कवि के विचार क्या हैं?

गोताखोर सागर के गहरे पानी में डुबकियाँ लगता है और कई बार खाली हाथ लौट कर आता है उसकी खाली मुट्ठी और मोती पाने की तीव्र इच्छा उसके उत्साह को दुगना करदेती है उसकी मुट्ठी हर बार खाली नहीं होती। उसी तरह मनुष्य को भी एक दो बार सफलता न मिलने पर घबराना नहीं चाहिए किन्तु प्रयत्न करते रहने से एक न एक बार उसे सफलता ज़रूर मिलेगी।

3. असफलता से सफलता की ओर जाने के बारे में कवि क्या संदेश देते हैं?

कवि कहते हैं कि असफलता को हमें जीवन में आई एक चुनौती की तरह स्वीकारना चाहिए, असफलता का कारण ढूंढ कर उन कमियों को सुधारकर सही योजना से सफल होने का प्रयत्न करने चाहिए, और जब तक सफलता नहीं मिलती नींद और चैन को त्याग कर संघर्ष करते रहना चाहिए। कभी

कठिनायियों से घबरा कर संघर्ष के मैदान को नहीं छोड़ना चाहिए। बिना परिश्रम के किसी की जय-जयकार नहीं होती; और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

III . भावार्थ लिखिए :-

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,

चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,

चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना ना अखरता है।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

संदर्भ :- प्रस्तुत कविता भाग को हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि सोहनलाल द्विवेदी जी के द्वारा रचित "कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती " पद्य भाग से लिया गया है ।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में कवि ने यह उल्लेख किया है कि किसी की भी मेहनत कभी बेकार नहीं होती और कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने यह बताया है कि जब एक नन्ही सी चींटी अपने वज़न कई गुना ज़्यादा वज़न वाले दाने को लेकर जब दीवारों पर चढ़ती है तो सौ बार फिसलती है; फिर भी बार-बार चढ़ती है, उसके मन का यह विश्वास कि वह ज़रूर सफल होगी उसे साहस प्रदान करता है; उसका बार-बार गिरकर चढ़ना या चढ़कर गिरना उसे बुरा नहीं लगता; और अंत में वह सफल होती है उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।

जीवन मूल्य :- उसी तरह मनुष्य को भी कठिन से कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए; क्यों कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

IV . तुकांत शब्द (Rhyming Words) :-

- पार - हार
- चलती - फिसलती
- भरता - अखरता
- लगाता - आता
- बार - हार
- स्वीकार - सुधार
- त्यागो - भागो

V . पद्यभाग को पूर्ण कीजिए :-

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो।

क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो।

जब तक ना सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,

संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।

कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

VI . अनुरूपता (Anology) :-

- मेहनत : परिश्रम : : कोशिश : प्रयत्न
- चढ़ना : उतरना : : हारना : जीतना
- स्वीकार : इन्कार : : चैन : बेचैन
- सिंधु : समुद्र : : लहर : तरंग
- मोती : गोताखोर : : दाना : चींटी
- साहस : धैर्य : : हार : पराजय

VII. सफलता प्राप्त करने से संबन्धित शब्दों पर गोला लगाइए :-

सार्थक परिश्रम आत्मविश्वास आराम से सोना सतत अभ्यास हैरान होना

बेकार का काम करना पराजय का स्वीकार सार्थक काम करना कुछ करके दिखाना

शिक्षा प्राप्ति भटकना भाग जाना भला करना

ASMA ZAUQIA
9901038590

VIII. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर परिश्रम पर लघु लेख तैयार कीजीए :-

सफलता की पहली कुंजी मेहनत है, इसके बिना सफलता को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जीवन में आगे बढ़ना है, और सुख सुविधा से रहना है, तो मनुष्य को कोशिश करते रहना चाहिए। सिर्फ एक ही कोशिश से सफलता प्राप्त नहीं होती। इस केलिए संघर्ष करना पढ़ता है। नींद और चैन को त्यागना पढ़ता है। श्रम का फल सहजता से नहीं मिलता कई बार खाली हाथ रेह जाते हैं। जीवन में कभी हार का सामना करना पड़े तो भी चुनौती समझ कर साहस के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए। क्यों कि गिरना-चढ़ना जीवन में लगा ही रहता है। असफलता के कारण को पहचान कर कमियों को सुधारने से हमें सफलता निश्चय ही प्राप्त होगी।

याद रखिए :-

- "कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती" कविता के कवि सोहनलाल द्विवेदी जी हैं।
- कवि सोहनलाल द्विवेदी जी 'दैनिक अधिकार' नामक पत्रिका के संपादक थे।
- कवि सोहनलाल द्विवेदी जी को 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से अलंकृत किया गया।
- लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
- कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।
- चींटी दाना लेकर दीवारों पर चढ़ती है।
- मन के विश्वास से रगों में साहस बढ़ता है।
- चींटी को दीवरों पर चढ़कर गिरना या गिरकर चढ़ना अखरता नहीं है।
- चींटी की मेहनत बेकार नहीं होती।
- गोताखोर सागर में डुबकियाँ लगता है।
- गोताखोर खाली हाथ लौटकर आता है।
- हैरानी में मन का उत्साह बढ़ता है।
- मोती गहरे पानी में मिलते हैं।
- गोताखोर मुट्ठी खाली नहीं होती।
- असफलता एक चुनौती है।
- हमें असफलता को स्वीकार करना चाहिए।
- सफलता पाने के लिए हमें असफलता के कारणों को ढूंढकर उन कमियों का सुधार करना चाहिए।
- सफलता पाने तक हमें नींद और चैन को त्यागना चाहिए।
- संघर्ष के मैदान से भागना नहीं चाहिए।
- कुछ किए बिना जय-जयकार नहीं होती।

ASMA ZAUQIA
9901038590

कविता से आगे :-

प्रस्तुत कविता की निम्नलिखित कविता की पंक्तियों से तुलना कीजिए :-

लहरों से दर कर नौका पार नहीं होती कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती।	पर्वत की चोटी छूने को पर्वत पर चढ़ना पढ़ता है।
जैसे प्रस्तुत कविता में द्विवेदी जी ने कहा है कि अगर समंदर के दूसरे किनारे तक पहुँचना है तो भयंकर लहरों का सामना करना ही पढ़ता है, अर्थात अपने लक्ष्य को पाने केलिए समस्याओं का डट कर सामना करने वालों को ही सफलता मिलती है।	ठीक उसी तरह इस कविता में कवि कह रहे हैं कि पर्वत पर चढ़े बिना शिखर को छू नहीं सकते उसके लिए पर्वत पर चढ़ना ही पढ़ता है। अर्थात परिश्रम और कोशिश किए बिना सफलता के शिखर को कोई नहीं छू सकता।
डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है, जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है। मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में, बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में। मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती। कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।	सागर से मोती लाने को गोता लगाना ही पढ़ता है।
गोताखोर सागर के गहरे पानी में डुबकियाँ लगता है और कई बार खाली हाथ लौट कर आता है उसकी खाली मुट्ठी और मोती पाने की तीव्र इच्छा उसके उत्साह को दुगना करदेती है उसकी मुट्ठी हर बार खाली नहीं होती। उसी तरह मनुष्य को भी एक दो बार सफलता न मिलने पर घबराना नहीं चाहिए किन्तु प्रयत्न करते रहने से एक न एक बार उसे सफलता ज़रूर मिलेगी।	इस कविता में कवि कहते हैं कि सागर से अगर मोती लाने कि इच्छा है तो सागर में डुबकी लगाना ही पढ़ता है। उसी तरह सफलता पाने के स्वप्न देखने से कुछ नहीं प्राप्त होता उसकेलिए परिश्रम करना पढ़ता है।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है, चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है। मन का विश्वास रगों में साहस भरता है, चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना ना अखरता है। आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।	उद्यम किए बिना तो चींटी भी अपना घर बना न पाती। उद्यम किए बिना तो सिंह को भी अपना शिकार मिल न पाता।

कवि नन्ही चींटी का उदाहरण देकर कहते हैं कि एक नन्ही सी चींटी दाने को लेकर जब दीवारों पर चढ़ती है तो सौ बार फिसलती है; फिर भी बार-बार चढ़ती है, उसके मन का यह विश्वास कि वह ज़रूर सफल होगी उसे साहस प्रदान करता है और उसका बार-बार गिरकर चढ़ना या चढ़कर गिरना उसे बुरा नहीं लगता; अंत में वह सफल होती है। उसी तरह मनुष्य को भी कठिन से कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए।	चींटी भी अपना घर बिना परिश्रम किए नहीं बना सकती और सिंह को भी अपना आहार ढूंढने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। उसी प्रकार मनुष्य भी उद्यम करके ही अपने जीवन को सुखमय बना सकता है।

उपर्युक्त दोनों कविताओं की तुलना करने पर हम देख सकते हैं कि इन दोनों ही कविताओं के कवियों ने परिश्रम और कोशिश का महत्व समझने की कोशिश की है।

खेल, काला, सिनेमा, चिकित्सा, विज्ञान, इत्यादि कार्यक्षेत्र में सफलता प्रपट किए हुये व्यक्तियों की सूची तैयार कीजिए :-

क्रं. सं	कार्यक्षेत्र	सफलता प्राप्त व्यक्तियों के नाम
1	**क्रिकेट**	सचिन तेंडूलकर, विराट कोहली, सेहवाग, कपिल देव, MS धोनी
2	**कला**	M.F.हुसैन, A.R.रेहमान, लता मंगेशकर, मैथिलीशरंगुप्त, बसवान्न, कुवेम्पु
3	**सिनेमा**	अमिताभ बच्चन, Dr. राजकुमार, दिलीप कुमार, शाहरुख़ खान, ऐश्वर्या राय, श्रीदेवी, माधुरी दीक्षित
4	**चिकित्सा**	धन्वंतरि, सुश्रुता, पंचनंदा
5	**विज्ञान**	सर C.V. रामन, विक्रम साराभाई, जगदीश चन्द्र बोसे, A.P.J अब्दुल कलाम, होमी जहांगीर भाभा,
6	**खेल**	मेरी कोम, सानिया मिर्ज़ा, सानिया महवाल, मिलका सिंह, ध्यान चंद, महेश भूपति, P.T. उषा, विश्वनाथन आनंद
7	**गणित**	श्रीनिवासा रामानुजम, भास्करा, आर्यभटा, पिंगाला, ब्राह्मगुप्ता, माधवा

ASMA ZAUQIA
9901038590

सफलता, अच्छे काम, उत्साह बढ़ानेवाली प्रेरक सूक्तियों का संग्रह करके लिखिए :-

जैसे :- "हमरी सबसे बड़ी शान कभी गिरने में नहीं है, अपितु जब हम गिरे, हर बार उठने में है।"

- "सपने वो नहीं, जो आप सोते वक़्त देखते हैं, सपने तो वो हैं जो आपको सोने नहीं देते हैं। "
  - डॉ. APJ अब्दुल कलाम
- "उत्साह, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास के बिना सफलता नहीं पायी जा सकती।"
- "सफलता का कोई रहस्य नहीं है, यह तैयारी, कड़ी मेहनत, और असफलता से सीखने का ही परिणाम है।"
- "सफलता 1 दिन में नहीं मिलती, मगर एक न एक दिन ज़रूर मिलती है।"
- "दुनियाँ की हर चीज़ ठोकर लगने से टूट जाती है। एक कामियाबी ही है, जो ठोकर खाकर ही मिलती है।"
- "महान संकल्प ही महान फल का जनक होता है।" - हजारी प्रसाद द्विवेदी

निम्नलिखित शब्दों की सहायता से अपने सहपाटियों तथा आद्यपकों से चर्चा करके कविता रचने की कोशिश कीजिए।

(नाम, धाम, मान, शान, राग, त्याग, योग, शोक, रोक, साहस, प्रयास, दूर, क़ुसूर, बुद्धि, सिद्धि, ध्यान, सम्मान,)

आलस को त्याग कर बंधु लो प्रभु का नाम,

बुद्धि और सिद्धी से ही मिलेंगे ईश्वर के चारों धाम।

मान, शान और सम्मान अगर तुम चाहो प्रभु का योग करो,

रोग, शोक सब दूर भागकर करते रहो प्रयास।

साहस और ध्यान लगाकर सफलता की ओर बढ़ो।

असफलता को क़ुसूर मत देना,

अपनी सफलता और सम्मान के लिए प्रयास तुम करते रहना।

नींद चैन को दूर भगादो राग प्रभु के गाओ

देखो कोई न रोक सकेगा मेहनत कर दिखलाओ।

ASMA ZAUQIA
9901038590

यू-ट्यूब में 10 से भी अधिक इस कविता से संबन्धित चित्र सहित उदाहरण मिलेंगे। उनका संग्रहण कीजियए और कक्षा में इस विषय पर चर्चा कीजियए।

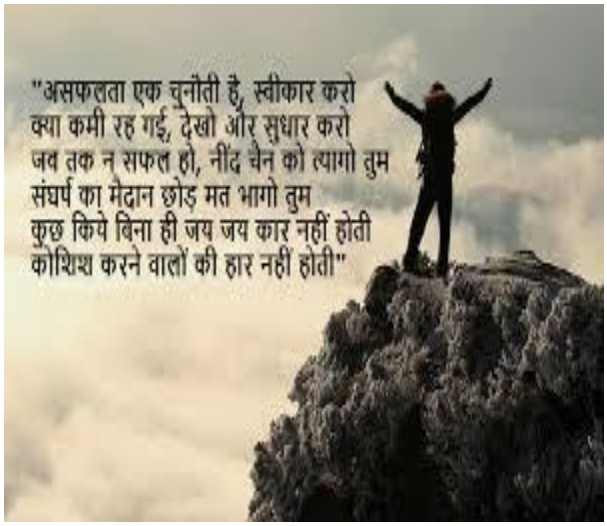

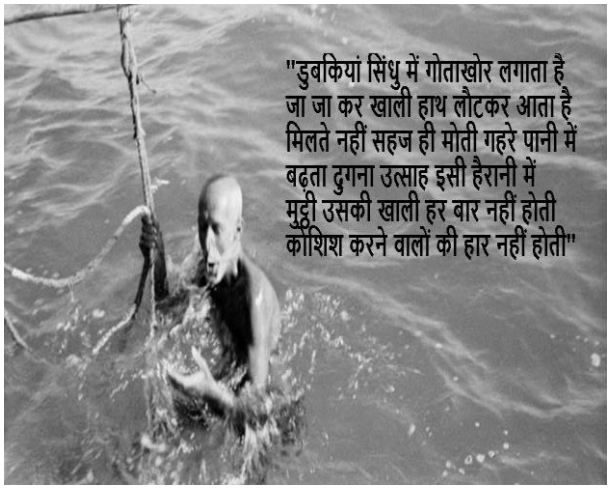

ASMA ZAUQIA
9901038590

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

लहरों से डर कर नौका कभी पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती